सत्यापन क्रमांक :
RAJHIN/2015/60530

ओ३म्

# महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ६ अंक : ३ १ मार्च २०२० जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० र वार्षिक

. मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में न लगावे।....इसलिये मूर्ति्त पूजा करना अधर्म है २. क्रोड़ों रुपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उस में प्रमाद होता है। ३. व्यभिचार, लड़ाई बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं। ४. ....मानके पुरुषार्थ रहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गमाता है। ५...विरुद्ध स्वरूप नाम चरित्र युक्त मूर्ति्तयों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होके...फूट बढ़ा के देश का नाश करते हैं।६. उसी के भरोसे.....आप पराधीन भठियारे के टट्टू और कुम्हार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में होकर अनेक विधि दुख पाते हैं। ७. ..जो परमेश्वर की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्ति्तयां धरते हैं उन दुष्ट बुद्धि वालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करे ? ८. भ्रान्त होकर मन्दिर-मन्दिर... दुख पाते, धर्म, संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीड़ित होते, ठगों से ठगाते रहते हैं। ९. दुष्ट पूजारियों को धन देते हैं वे उस धन को वेश्या, परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, लड़ाई बखेडों में व्यय करते हैं जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है। १०. माता पिता आदि माननीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्ति्तयों का मान करके तघ्न हो जाते हैं। ११. उन मूर्ति्तयों को कोई तोड़ डालता वा चोर ले जाता है तब हा-हा करके रोते रहते हैं।१२. पूजारी परस्त्रियों के संग और पूजारिन परपुरुषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री पुरुष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं। १३. स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरुद्ध भाव होकर नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। १४. जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है। १५. सुगन्धियुक्त..पुष्पों की ...सुगन्ध .....का नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल ..दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। क्या परमात्मा ने पत्थर पर चढ़ाने के लिये पुष्पादि सुगन्धियुक्त पदार्थ रचेहैं। १६. पत्थर पर चढ़े हुए पुष्प, चन्दन और अक्षत.. से दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मलका। और सहस्रोंजीव उस में पड़ते उसी में मरते और सड़ते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश-धर्म की अवनति का बहुत बड़ा कारण मूर्ति पूजा को मानते हुए और एक पाखण्ड होने के कारण इसका खण्डन किया। अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास में इसकी सोलह हानियाँ तो एक ही स्थल पर गिनाई है, जो संक्षिप्त रुप से बताई है। पृष्ठभूमि में सच्चे चित्र भी है। विस्तार से सत्यार्थप्रकाश में देखें। मंदिर के ताला लगाने वाला पुजारी और तोड़ने वाला चोर मूर्ति का यथार्थ जानते है! आप ??????????

श्रीवैदिक स्वस्तिपंथा न्यास, भागलभीम, तहसीलः भीनमाल जिः जालौर में महाशिवरात्रि पर्व "बौद्धिक स्वतंत्रता की ओर" विषय पर सम्मेलन रूप में मनाया। यज्ञ, मंच,वक्ताओं और श्रोतावृन्द के चित्र। (समाचार भीतर देखें)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

## महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।


**महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र**

# महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ६ अंक : ३

दयानन्दाब्द : -१९६

विक्रम संवत् : माह-फाल्गुन-चैत्र २०७६

कलि संवत् ५१२०

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,१२०



**सम्पादक मण्डल :**

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा



कार्यवाहक सम्पादक :

**कमल किशोर आर्य**

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055



**प्रकाशक :** 0291-2516655

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज

के पास, जोधपुर ३४२००१



लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.



वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)


## अनुक्रमणिका


| | क्या | कहाँ |
|---|---|---|
| १. | सम्पादकीय.... | ४ |
| २. | प्रार्थना-विषय..... | ८ |
| ३. | वेद-वचन..... | ९ |
| ४. | तेरी वन्दना के गीत.... | ११ |
| ५. | आर्यसमाज का इतिहास | १२ |
| ६. | अथ गृहाश्रम संस्कारविधि......... | १५ |
| ७. | भजन प्रतियोगिता सूचना | १८ |
| ८. | आर्यसमाज लुधियाना की झलकियाँ | १९ |
| ९. | खुशियाँ ऐसे भी..... | २० |
| १०. | महर्षि दयानन्द जयन्ती मनाई | २१ |
| ११. | महाशिवरात्रि महोत्सव.. | २४ |
| १२. | आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश श्रद्धांजलियाँ | २६ |


महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC B A R B 0 J O D H P U

यह पांचवा अक्षर जीरो है

# महर्षि ने खंडन किया, खंडित नहीं किया !!!
# जिसने खंडन नहीं किया, उसने खंडित किया!!!

संसार का प्रत्येक मनुष्य यह चाहता है कि दूसरे सब मनुष्य उससे सत्य ही बोले, प्रेम पूर्वक बर्ताव करें, उससे जाने अनजाने कोई त्रुटि हो जाए तो भी कोई भी व्यक्ति धैर्य ना खोए, क्रोध ना करें, भले ही उसके त्रुटि से किसी दूसरे को हानि हो जाए तो भी वह दूसरा उसे क्षमा कर दे; उसे और उसके संसाधन, धन–संपत्ति स्वजन या सुख से कोई भी ईर्ष्या न करे, न ही उसे प्राप्त करने की इच्छा रखे। शक्तिशाली भी उसके संसाधन, धन–संपत्ति स्वजन या सुख के हरण की इच्छा का दमन करें और छीनने का प्रयास भी कभी ना करें। जो कोई भी उसके संपर्क में आए, वह शुद्ध अंतःकरण, शुद्ध व्यवहार और शुद्ध कायावाला हो। कोई भी अन्य व्यक्ति उस पर, उसकी धनसंपत्ति, संसाधन, स्वजन या सुख पर इंद्रियों का दास बनकर डाका ना डाले। उसका पाला किसी मूर्ख से ना पड़े; सिर्फ बुद्धिमान से या विद्यावान से ही पड़े! वह किसी के भी क्रोध का भजन ना बने और मनसावाचाकर्मणा कोई भी उसे उसके धन, संसाधन, संपत्ति, स्वजन या सुख को कोई हानि न पहुँचाएँ।

दुनिया के सभी मनुष्यों को इन बातों पर सहमत हो जाना चाहिए और ऐसा हो जाए तो इसके फलस्वरूप बनी साम्यावस्था से दुनिया स्वर्ग बन जाए, जैसे कि कुछ हजार वर्ष पहले तक थी। मनुष्य मात्र में इस वैचारिक और व्यवहारिक साम्यावस्था से संसार के सभी मनुष्य परस्पर स्वजन बन जाए–ऐसी ही किसी अवस्था के चिरस्थाई होने पर दुनिया को "वसुधैव कुटुंबकं" का नाद सुनाई दिया होगा। सुदीर्घकाल तक रही इस साम्यावस्था में मनुष्य के उत्थान की सर्वोच्च अवस्था, जिसे चिरस्थाई सुख या मोक्ष या परमात्म प्राप्ति भी कहा जाता है– के मार्ग सुलभ थे। आत्मोत्थान की इस सुलभता में आत्मलीनता इतनी विकसित हो जाती है कि परस्परतंत्रता क्षीण होती जाती है और दूसरों के विकार और अवनति से सरोकार क्षीण हो जाता है। परस्परतंत्रता के क्षीण होने व आत्म निरीक्षण के अभाव में मनुष्य का श्रेयमार्ग को छोड़कर प्रेयमार्ग की ओर बढ़ना याकि भावी शाश्वत सुखके स्थान परउपलब्ध अल्पकालीन सुख की ओर उन्मुख होना स्वाभाविक है। किंतु इस प्रक्रिया से **"वसुधैव कुटुंबकं"** की जनक साम्यावस्था में विक्षोभ उत्पन्न होता है

ऐसी कल्याणकारी वैचारिक और व्यवहारिक साम्यावस्था में विक्षोभ आने का तात्पर्य है कि श्रेयामार्ग से प्रेयमार्ग की ओर बढ़ते कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अपने या अपने स्वजनों के लिए दूसरों से अधिक धन, संसाधन, संपत्ति या सुख चाहते हैं। सज्जनतो धैर्यशील होगा ही! किंतु कभी–कभी यह धैर्य बड़ा घातक होता है। जैसे ही सर्व कल्याणकारी साम्यावस्था में प्रथम बार विक्षोभ हुआ था तभी विक्षोभ के कारणों का खंडन किया जाना था। किंतु धैर्य, क्षमा, दया, द्वंद्वसहनरूपी तप, अक्रोध आदि सद्गुणों के कारण

खंडन नहीं किया गया। सज्जन लोग भूल गए कि अक्रोध धर्म होते हुए भी समन्यु होने की प्रार्थना हम नित्य करते है। मन्यु का प्रयोग सौम्यता पर तो नहीं ही होता है और विक्षोभकारी दुष्टों पर किया नहीं गया। परिणाम था वेदाज्ञा से बनी साम्यावस्था में स्थाई विक्षोभ का आरंभ के साथ ईश्वरीय व्यवस्था की पालना में प्रमाद, मतभिन्नता, तज्जनित पीड़ा की प्रतिक्रिया में वाममार्ग, बौद्ध जैनादि नास्तिक मतों का उदय! यहॉ तक इन विक्षोभ की भयानक और मारक हानि दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। क्योंकि मतभिन्नता में भी मतों के चयन में कोई बलात्कार नहीं था, हिंसा नहीं थी। स्वागत अवश्य था, आह्वान अवश्य था, किंतु दुष्प्रेरणा, हॉकने या हिंसा जैसी बात तो नहीं ही थी एवं मतभिन्नता या मतभेद मनभेद में परिवर्तित नहीं हुए थे। किंतु तर्क, युक्ति और प्रमाण का महत्व कम हो जाने से भविष्य के गर्भ में भेद और तज्जनित वैमनस्य भी अवश्य थे, जो रोटी–बेटी और व्यवहार के संबंध में बनाए घेरो या वलयों के रूप में सम्मुख आए, जिसे आज जातिवाद और सांप्रदायिकता का नाम दिया जाता है। कभी–कभी विशुद्ध उदात्त मानवीय भावों से युक्त लोग अमानवीय विक्षोभ की अवस्था को दूर करने के लिए स्वतः या अनजाने ही ऐसा काम कर देते हैं कि उनके द्वारा सुधार हेतु किया गया उपचार भी रोग का कारण हो जाता है। जाने–अनजाने वे स्वयं भी विक्षोभ करते रहे।

सुधार के नाम पर ऐसे ही विक्षोभ जब अरब के कबीलों में पैदा हुए, तो सहजता, सौम्यता, संवाद व सहनशीलता का लोप हो गया और लालच, भय, शंका, युद्ध, पाशविकता ही निर्णायक होने लगे। इन अरबी विक्षोभों ने संपूर्ण विश्व को आंदोलित व पीडित किया। साम्यावस्था के भंग के इन परिणामों को यदि प्रथम विक्षोभ के समय ही कोई देख लेता तो वामदेव, बृहस्पति, चार्वाक, बुद्ध, महावीर, जरथुस्त्र, इब्राहिम, युसूफ, मूसा, दाऊद, ईसा, मोहम्मद, नानक या कबीर आदि मतप्रवर्तक नहीं होते। इनमें से बहुत से मतप्रवर्तक दुराशय लिए हुए नहीं थे, उन्होंने तो प्रतिक्रिया मात्र की थी। किंतु अरब के कबीलाई क्षेत्रों से जो प्रवर्तक थे वे सिर्फ प्रेयमार्ग के पथिक थे। बिगड़े जगत की चिकित्सा के नाम पर उन्होंने औषध कम, विष अधिक दिया। जिसका परिणाम आज संपूर्ण विश्व बुरी तरह भुगत रहा है। विक्षोभ के इन कारणों में सिर्फ सांप्रदायिक नेतृत्व ही नहीं, राष्ट्रीय नेतृत्व, सामाजिक नेतृत्व, सांगठनिक नेतृत्व आदि भी सम्मिलित है।

इस वसुधा पर 'वसुधैव कुटुंबकम' तो दिवास्वप्न बना ही, स्वयं अपना परिवार भी अपनेपन वाला परिवार नहीं रह गया है। भाईबहन को भाईबहन से खतरा है। पुत्र पुत्रियों को पिता से खतरा है और माता पिता को अपनी संतान से। संस्त श्लोक "अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" को उपर्युक्त अनुच्छेद में घटित किया जा सकता है। विश्व में लघुचेता या संकीर्ण लोगों का बहुतायत हो गया। विश्वव्यापी संकीर्णता के कारण भौगोलिक, लैंगिक, जन्म की परिस्थितियॉ, भाषा, संस्कृति, संप्रदाय आदि की भिन्नता बने! इनमें से भी जन्म–मरण और कुछ हद तक विपत्तियॉ मनुष्य

के वश में नहीं है। अन्य सभी कारक मनुष्यों के बनाए हुए हैं और जन्म को भी विभेद का कारण मनुष्य ने ही बनाया, अर्थात् लघुचेता मानवों के बनाए नियम कायदे विश्व में प्रचलित हैं, जिससे संपूर्ण विश्व प्रताड़ित, सुधार की आशा मैं व्याकुल है। किंतु जिन परिस्थितियों में अल्पतम या बिना श्रम के अधिकतम भोग पाने वाले जो लोग लाभ की स्थिति में होते है, वे उन परिस्थितियों में परिवर्तन नहीं ही चाहते। निश्चित रूप से ये स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ के लिए उपेक्षा, निंदा, अंधश्रद्धा और हत्या रूपी पाप के हथियार भी काम में लेते नहीं हिचकते। क्योंकि इन्हें और इनके स्वजनों को अपने और अपने स्वजनों के लिए श्रम करना मौत से भी बुरा लगता है और सत्य, न्याय और परोपकार के भाव इन्हें छू भी नहीं गए होते। विक्षोभ की इस सुदीर्घावस्था में लाभ प्राप्त करने वाले पीड़क तो इसे नियति व हक मानने ही लगे, दीर्घकाल से पीड़ा सहते सहते पीड़ित ने भी इस अवस्था को नियति या नैसर्गिकता मान लिया। उदाहरणः आदिवासी या ठेठ ग्रामीण परिवेश में रहने वाला एक अछूत आपके पास उपलब्ध नारियल को छीलकर आपको देने हेतु पहले पूछेगा कि क्या आप उस अछूत के हाथ से छीला हुआ नारियल खाएंगे? आप हॉ कहेंगे तो पूछेगाः क्या आप भी अछूत जाति के हैं? जब आप मना करेंगे तो उसे आश्चर्य होगा। और जब आप उसे यह कहेंगे कि वह भी आपके लिए अछूत नहीं है, तो भी उसे संकोच होगा, संभ्रम की स्थिति उसके हावभावों में देखी जा सकती है। ऐसे लोगों ने अछूत होना अपनी नियति और नैसर्गिकता मान लिया है। वे स्वयं छुआछूत की अनुपालना करना अपना धर्म मान बैठे हैं।

इस विकट समस्या का स्थाई हल हेतु कदम तो अपनी ऐषणाओं से मुक्त, निर्भय, निस्वार्थ और परोपकार मात्र के लिए जीने वाला व्यक्ति ही सर्वहिताय उठाकर इन सबको सुधारने की बात कर सकता है। ऐसे महापुरुषों में महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती का स्थान सर्वोच्च है। महर्षि भी विकृत परिवेश में जन्मे थे, विकृत परिवेश का प्रेक्षण किया था, विकृत परिवेश में ही आगे भी बढ़े थे। किंतु विशेष बात यह थी कि वे रोग के बाहरी लक्षणों पर ही नहीं रुके, वरन् उनकी जड़ तक अर्थात् साम्यावस्था तक गए, वैदिक व्यवस्था तक गए। और प्रथम विक्षोभ तक उनकी दूरदृष्टि से छुप नहीं सका। इसके उपचार हेतु संजीवनी बूटी उन्हें जो मिली वह साम्यावस्था को प्राप्त करा सकती थी और महर्षि ने कराहती मानवता को वह चिकित्सा देनी आरंभ भी की। उपचार में कड़वी दवाएँ भी थी और शल्यक्रिया भी!

उपचार को जो रोगी समझ लेता है वह अपने शरीर पर दस बारह इंच का गहरा चीरा भी लगवा लेता है। अन्यथा कोई इंचभर का चीरा भी उसे लगा दे, तो वह न्याय मांगने चला जाता है। महर्षि की चिकित्सा जिन रोगियों की समझ में आई वे स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम,मुनिवर गुरुदत्त, महात्मा हंसराज,लाला लाजपतराय उनके ही समान ऋषि मार्ग के पथिक बनते चले गए और बनते चले जा रहे हैं। किंतु जिन नीमहकीमों की दुकानदारी बंद होने के आसार हो गए वे स्वार्थी और चिकित्सा को नहीं समझने वाले मूर्ख

रोगी महर्षि की चिकित्सा को हमला बताने लगे। अमृतमय चिकित्सा करने वाले उस दिव्य वैद्यराज को विष देकर मार डाला। यह अभागे उस महर्षि को समझ ना पाये। महर्षि के परोपकारी व्यक्तित्व और कृतित्व को समझाने के लिए एक छोटी सी लघुकथा आर्यों द्वारा अक्सर कही जाती है– दुनिया के सभी मतावलंबी और दार्शनिक इकट्ठे हुए। वे सभी एक ही विषय पर चिंतन कर रहे थे। उनको पीढ़ियों से उपलब्ध हो रहे बिना श्रम के सुखों के नष्ट होने का भय सता रहा था। उन्हें लग रहा था कि वे अब अधिक समय तक सब लोगों को मूर्ख बनाए रखकर अपना स्वार्थसाधन नहीं कर सकेंगे। वे सभी एक ही व्यक्ति से पीड़ित थे। उसी एक व्यक्ति पर ये सब मिलकर विचार कर रहे थे। उनका दुखड़ा यह था कि उस व्यक्ति के किसी भी कथन का विरोध तर्क, युक्ति और प्रमाण युक्त सच्चाई के साथ नहीं किया जा सकता था। क्योंकि सब उस व्यक्ति ने अपनी जिंदगी में कोई भी वचन असत्य नहीं कहा था! जिस सत्यवादी व्यक्ति से सभी धूर्त पीड़ित थे, वह व्यक्ति थे महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती और उनकी सब धूर्तो परेशानी थी कि दयानंद ने मात्र सत्य बोला है। इन लोगों ने महर्षि दयानंद को तो मार ही डाला; अब उनके द्वारा जलाई ज्योति को बुझा अज्ञान, अन्याय और अभाव रूपी तमोनिशा बनाए रखने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। पीड़ा के कारणों को समझकर उसके पीड़ादायक विषैले कारणों की रामबाण औषध देते हुए सर्वजनहिताय परोपकार मात्र करते हुए, सत्यमात्र बोलते हुए, महर्षि दयानंद सरस्वती और उनके बाद उनके अनुयायियों के जितने शत्रु बने अन्य किसी के नहीं बने।

कराहती मानवता को आज भी दयानन्द ही चाहिए। चिकित्सा तो आज भी महर्षि की ही लागू होगी। उनसे अलग मार्ग पर चलने का परिणाम दर्शा दिया गया है और नहीं मानने पर उनके बाद भी देख लीजिए! लिंग, जाति वर्ग से निरपेक्ष सभी विद्यार्थियों को समान शिक्षा भोजन और परिवेश देने के स्थान पर जन्मना जातिवाद जनित दुरवस्था में सुधार के लिए कानूनी प्रावधान किए गए व आरक्षण को दलितों का इलाज माना गया।

इसका परिणाम यह है कि आरक्षण का झुनझुना बजाता, एससी एसटी एक्ट का दुरुपयोग करता दलित कहा जाने वाला व्यक्ति विधि प्रदत इन लाभों के खोने के भय से अपनी अवस्था में परिवर्तन नहीं चाहता! पीड़ित वर्ग को आरक्षण या कुछ विधियों से राहत अवश्य मिली है, समानता नहीं! किंतु इस उपचार से असमानता चिरस्थाई और कलह क्लेशकारी बन रही है। उदाहरणः भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित होने के बाद सर्वोच्च स्तर तक पहुॅचने वाला या सांसद अथवा उच्चतम संवैधानिक पदधारी सुयोग्य व्यक्ति भी ना तो स्वत इस भेद को मिटाकर स्वयं को दलित–भाव, विचार या अवस्था से हटाने को तत्पर है और न हीं सदियों से इस वर्ग का जन्म के आधार पर दलन करने वाला वर्ग इस सुयोग्य तथाकथित दलित वर्ग के साथ रोटी बेटी का संबंध बनाता है। यह स्थिति बहुत भयानक है! और लंबे समय से चली आ रही है जिसके बदलने के आसार भी दृष्टिगत नहीं है। क्रमशः

– कमलकिशोर आर्य

## स्तुति-विषय —आर्याभिविनय से

**य आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।**

**यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।४८।।** - यजु. २५।१३

**व्याख्यान**- हे मनुष्यों ! "**यः**" जो परमात्मा अपने लोगों को "**आत्मदाः**" आत्मा का देनेवाला तथा आत्मज्ञानादि का दाता है, जीवप्राणदाता तथा "**बलदाः**" त्रिविध बल-एक मानस विज्ञानबल, द्वितीय इन्द्रियबल, अर्थात् श्रोत्रादि की स्वस्थता, तेजोवृद्धि, तृतीय शरीरबल नाम नैरोग्य, महापुष्टि, दृढाङ्गता और वीर्यादि वृद्धि-इन तीनों बलों का जो दाता है, जिसके "**प्रशिषम्**" अनुशासन (शिक्षा-मर्यादा) को "**देवा**" विद्वान् लोग यथावत् मानते हैं, सब प्राणी-अप्राणी-जड़-चेतन, विद्वान् वा मूर्ख उस परमात्मा के नियमों का कोई कभी उल्लंघन नहीं कर सकता, जैसे कि कान से सुनना, आँख से देखना, इसको उलटा कोई नहीं कर सकता । "**यस्य**" जिसकी "**छाया**" आश्रय ही "**अमृतम्**" विज्ञानी लोगों को मोक्ष कहाता है तथा जिसकी अछाया (अकृपा) दुष्टजनों के लिए बारम्बार मरण और जन्मरूप महाक्लेशदायक है । हे सज्जन मित्रों ! वहीं एक परम सुखदायक पिता है। आओ "**कस्मै देवाय हविषा विधेम**" अपने सब जने मिलके उससे प्रेम, उसमें विश्वास और उसकी भक्ति करें, कभी उसको छोड़के अन्य को उपास्य न मानें । वह अपने को अत्यन्त सुख देगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ।।४८।।

**उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः । अथोऽअन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः ।**

**क्षेमाय वः शान्त्यै प्र पद्ये शिवꣳ शग्मꣳ शंयोःशंयोः ।।४९।।** - यजु. ३।४३

**व्याख्यानः**- हे पश्वादिपते ! उत्तम महात्मन् ! आपकी ही कृपा से "**उपहूताः, इह, गावः**" उत्तम-उत्तम गाय, उपलक्षण से भैंस, घोड़े, हाथी, "**उपहूताः अजावयः**" बकरी, भेड़ तथा उपलक्षणता से अन्य सुखदायक सब पशु और "**अथ अन्नस्य कीलालः**" अन्न, सर्वरोगनाशक ओषधियों का उत्कृष्ट रस "**नः**" हमारे "**गृहेषु**" घरों में "**उपहूतः**" नित्य स्थिर (प्राप्त) रख, जिससे किसी पदार्थ के बिना हमको दुःख न हो । हे विद्वानों ! "**वः**" (युष्माकम्) तुम्हारे सङ्ग और ईश्वर की कृपा से "**क्षेमाय**" क्षेम, कुशलता और "**शान्त्यैः**" शान्ति तथा सर्वोपद्रव विनाश के लिए "**शिवम्**" मोक्ष-सुख "**शग्मम्**" और इस संसार के सुख को मैं यथावत् "**प्रपद्ये**" प्राप्त होऊँ । "**शंयोः शंयोः**" मोक्ष सुख और प्रजा-सुख इन दोनों की कामना करने वाला जो मैं हूँ, मेरी उक्त उन दोनों कामनाओं को आप यथावत् शीघ्र पूरा कीजिए, आपका यही स्वभाव है कि अपने भक्तों की मनोकामना आवश्य पूरी करना ।।४९।।

**— महर्षि दयानन्द सरस्वती**

# वेद-वचन

## सत्य मार्ग पर चलो

**सुगो हि वो अर्यमन्मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति ।**

**तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ।।ऋग्.२।२७।६।।**

**पदार्थः**- हे **(आदित्याः)** विद्वान् लोगों! हे **(अर्यमन्)** श्रेष्ठ सत्कारयुक्त ! हे **(मित्र)** मित्र ! हे **(वरुण)** प्रतिष्ठित सज्जन! जो **(वः)** तुम लोगों का **(अनृक्षर)** कण्टकादिरहित **(सुगः)** जिसमें निर्विघ्न चल सकें **(साधुः)** जिसमें धर्म की सिद्धि करते ऐसा **(पन्थाः)** मार्ग **(अस्ति)** है, **(तेन, हि)** उसी मार्ग से चलने के लिए **(नः)** हमको **(अधि वोचत)** अधिक कर [अधिकारपूर्वक] उपदेश करो, और जो यह **(दुष्परिहन्तु)** बड़ी कठिनता से टूटे-फूटे ऐसे विद्याभ्यास आदि के लिए बना हुआ **(शर्म)** घर है, वह **(नः)** हमारे लिए **(यच्छत)** देओ ।

**भावार्थः**- मनुष्यों को चाहिए कि धर्मात्मा विद्वानों के स्वभाव को ग्रहण कर वेदोक्त सत्यमार्ग में चलें; जिससे सत्यशास्त्र के पढ़ने-पढ़ाने की वृद्धि होवे, वही कर्म सदा सेवन करने योग्य है ।

## वीर योद्धा

**प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।**

**उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ।।** -यजु.१७।४६।।

**पदार्थ** :- हे **(नरः)** अनेक प्रकार के व्यवहारों को प्राप्त करने वाले मनुष्यों! तुम **(यथा)** जैसे शत्रुजनों को **(इत)** प्राप्त होओ और उन्हें **(जयत)** जीतो तथा **(इन्द्रः)** शत्रुओं को विदीर्ण करने वाला सेनापति **(वः)** तुम लोगों के लिए **(शर्म)** घर **(प्र, यच्छतु)** देवे । **(वः)** तुम्हारी **(बाहवः)** भुजाएँ **(उग्राः)** दृढ़ **(सन्तु)** हों । तुम लोग **(अनाधृष्याः)** शत्रुओं से न धमकाने योग्य **(असथ)** होओ, वैसा प्रयत्न करो ।

**भावार्थः**- इस मन्त्र में उपमालङ्कार है । जो शत्रुओं को जीतनेवाले वीर हों, उनका सेनापति धन, अन्न, गृह और वस्त्रादि से निरन्तर सत्कार करें तथा सेनास्थ जन जैसे बली हों, वैसे व्यवहार, अर्थात् व्यायाम और अस्त्र-शस्त्रों का चलाना सीखें ।

# प्रभु-प्रेम से परमानन्द

**अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत ।**

**परिष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ।।साम. ३७५।।**

**पदार्थः**- हे मनुष्यो ! **(वः)** तुम्हारी **(स्वर्युवः)** परमानन्द चाहनेवाली **(सध्रीचीः)** सीधी-सच्ची **(उशतीः)** कामना करती हुई **(विश्वाः मतयः)** सारी बुद्धियाँ, **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(इन्द्रम्)** परमेश्वर को **(अनूषत)** स्तुत करें । दृष्टान्त **(न)** जैसे **(शुन्ध्युम्)** शुद्ध **(मघवानम्)** धनवान् **(मर्यम्)** मनुष्य को **(ऊतये)** धन-धान्य द्वारा अपनी रक्षा के लिए स्तुत करते हैं, तद्वत् । दूसरा दृष्टान्त **(यथा)** जैसे **(जनय)** स्त्रियाँ **(पतिम्)** पति को **(परिष्वजन्त)** आलिङ्गन करती हैं, तद्वत् ।

**भावार्थः**- मनुष्य का जितना प्रेम स्त्री-पुरुष के परस्पर भाव में है, अथवा जितनी कामना और दीनता, प्रार्थना, धन आदि पदार्थों के लिए करते हैं यदि इतना प्रेम और इतनी नम्रता परमेश्वर के प्रति धारण करें तो अवश्य परमानन्द की प्राप्ति और संसार से रक्षा हो ।

# आदर्श मित्रता

**अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।**

**अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति ।। अथर्व.-७।३७।१।।**

**पदार्थः**-१. **(नौ)** हम दोनों की **(अक्ष्यौ)** दोनों आँखें **(मधुसंकाशे)** ज्ञान का प्रकाश करनेवाला और **(नौ)** हम दोनों का **(अधीकम्)** मुख **(समञ्जनम्)** यथावत विकासवाला होवे **(माम्)** मुझको **(हृदि अन्तः)** अपने हृदय के भीतर **(कृणुष्व)** कर ले, **(नौ)** हम दोनों का **(मनः)** मन **(इत्)** भी **(सह)** एकमेल **(असति)** होवे ।

**भावार्थः**- २. पति-पत्नी परस्पर संवाद करते हैं:- (नौ अक्ष्यौ) हम दोनो के नेत्र (मधुसंकारों) मधु के समान हों। अर्थात् मधु जैसे मधुर व स्निग्ध है, वैसे ही हमारे नेत्र एक दूसरे को मधुर भाव व स्नेह से देखें। (नौ) हम दोनों का (अनीकम्) मुखमण्डल भी एक दूसरे को देखकर को (समज्जनम्) प्रसन्नता से प्रफुल्लित हों, सरस हों। (माम्) मुझे (हृदि) हृदय में (अंतः कृणुष्व) भीतर धारण करें, स्थान दें। (नौ) हम दोनों का (मनः) मन (इत्) निश्चितरुपेण (सह असति) समान हों, साथ रहे।

दम्पत्ति या सभी मनुष्य आपस में प्रीतियुक्त रहकर सदा धर्मयुक्त व्यवहार करके प्रसन्न रहें ।

## तेरी वंदना के गीत गाता हूँ

–डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ, मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः ।**
**पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति, वन्दारुस्ते तन्वं वन्दे अग्ने ।। ऋग् १.१४७.२**

ऋषिः **दीर्घतमा औचथ्यः** । देवता अग्निः । छन्दः त्रिष्टुप् ।

**(यविष्ठ)** हे सबसे अधिक युवा **(स्वधावः)** स्वात्मनिर्भर **(अग्ने)** परमेश्वर! **(मे)** मेरे **(अस्य)** इस **(मंहिष्ठस्य)** अतिशय उच्च **(प्रभृतस्य)** प्रकृष्ट रूप से आहृत **(वचसः)** स्तुति-वचन को **(बोध)** जान । **(त्वः)** कोई [तेरी] **(पीयति)** निन्दा करता है, **(त्वः)** कोई **(अनुगृणाति)** अनुकूल अर्चना करता है । [पर] **(वन्दारुः)** वन्दनशील (मैं) **(ते)** तेरे **(तन्वं)** स्वरूप की **(वन्दे)** वन्दना [ही] करता हूँ ।

हे अग्ने ! हे तेजः पुंज परमात्मन् ! तुम 'यविष्ठ' हो, युवतम हो, सबसे अधिक युवा हो । जो जितना अधिक युवा होता है, उसमें उतनी अधिक शक्ति होती है । परिणामतः तुम अतुल शक्ति के भण्डार हो । साथ ही तुम 'चिर-युवक' हो, सदा युवा रहने वाले हो । हम मानव तो शैशव, यौवन, बुढ़ापा आदि विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते रहते हैं और उन-उन अवस्थाओं में कभी अल्प-शक्तिमान्, कभी विपुल-शक्तिशाली और कभी जराजीर्ण होते रहते हैं । पर तुम सदा युवक और शक्तिसम्पन्न ही बने रहते हो। हे प्रभो !तुम 'स्वधावान्' भी हो । स्वधा का अर्थ है, स्वात्मा-धारण-शक्ति या आत्म निर्भरता । तुम कभी हम क्षुद्र प्राणियों की तरह पराश्रित नहीं रहते, किन्तु सदा स्वात्मनिर्भर रहते हो । तुम्हें अपनी किसी कार्य के लिए परमुखापेक्षी नहीं होना पड़ता । ऐसे महामहिमा-सम्पन्न तुम्हारे प्रति मैं स्तुति-वचनों की भेंट लाता हूँ । मेरे ये स्तुति-वचन 'महिष्ठ' हैं, अतिशय उच्च हैं, महान् हैं, स्वार्थ,क्षुद्रता, तुच्छता आदि से परिपूर्ण नहीं हैं और प्रकृष्ट रूप से आहृत हैं । मन की जिस तन्मयता से तुम्हारी जो स्तुति होनी चाहिए और उसमें जो गरिमा होनी चाहिए, उससे ये युक्त हैं । ये दिखाने मात्र के लिए कहे गये निःसार वचन नहीं हैं, किन्तु हृदय से निकले हुए सच्चे उद्गार हैं । अतएव तुम मेरे इन स्तुति-वचनों को सुनो, जानो, और जानकर मेरी याचनाओं को पूर्ण करो ।

यह जग बड़ा ही गोरखधन्धा है । इसमें द्विविध प्रवृत्तिवाले जन दिखाई देते हैं । कुछ तुम्हारी हिंसा करने पर उतारू हैं । वे नास्तिकता का दम भरते हुए ताल ठोककर कहते हैं कि- ''कोई ईश्वर नाम की वस्तु संसार में नहीं है, मनुष्य स्वयं अपना भाग्य-विधाता है, प्रकृति स्वयं अपने खेल रचाती है, बीच में ईश्वर को लाने की कोई आवश्यकता नहीं है । यदि ईश्वर है भी तो वह अत्यन्त निन्दनीय है, क्योंकि व्यर्थ ही हमारे और प्रकृति के कार्य में हस्तक्षेप करता है ।'' यद्यपि कुछ लोग इस प्रकार की बातें कहते हैं, पर सब लोग ऐसे नहीं हैं, क्योंकि अनेक जन तुम्हारी अर्चना में रस लेते हैं । मैं तुम्हारे निंदक और हिंसक नास्तिक-जनों का अनुसरण नहीं, किन्तु तुम्हारे आस्तिक-जनों का ही अनुसरण करता हूँ । मैं 'वन्दारु' बनकर वन्दनशील होकर, तुम्हारे स्वरूप की वन्दना करता हूँ, तुम्हारे गुणों का गान करता हूँ, और तुम जैसा बनने का प्रयास करता हूँ। मुझे बल दो कि मैं सच्चे अर्थों में तुम्हारा 'वन्दारु' बन सकूँ ।

**-वेद मञ्जरी से**

# स्त्री शिक्षा का प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द से पूर्व हिन्दू जाति में यह विश्वास घर कर गया था कि स्त्रियों को शास्त्र पढ़ने का अधिकार नहीं है । विचारों में इतनी गिरावट आ गई थी कि पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी को विद्या-अध्ययन के सम्बन्ध में शूद्र के समान माना जाने लगा था । इस भ्रममूलक विचार का महर्षि ने जोरदार शब्दों में खण्डन किया । इस सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश के निम्नलिखित प्रश्नोत्तर महत्त्वपूर्ण हैं:-

प्रश्न- क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें ?

उत्तर- अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में "इमम् मन्त्रं पत्नी पठेत् ।"

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े । जो वेदादि-शास्त्र को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके । भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादिशास्त्रों को पढ़के पूर्ण विदुषी हुई थीं यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है ।

अपने इस विचार की पूर्ति में महर्षि ने अपने सामने ही न्यून-से-न्यून दो पाठशालाओं की नींव रख दी थी । फिरोजपुर में अनाथालय के साथ ही कन्या महाविद्यालय की स्थापना भी की गई थी । मेरठ में एक कन्या पाठशाला भी महर्षि के जीवन काल में ही स्थापित हो गई थी ।

डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना के पश्चात् यह स्वाभाविक था कि आर्य-पुरुषों का ध्यान स्त्री-शिक्षा की ओर जाता । पंजाब में उस समय आर्यसमाज का काम बहुत प्रबलता से चल रहा था। यह हम पहले बतला आये हैं कि पाठविधि आदि के सम्बन्ध में आपसी मतभेद के कारण पंजाब के बहुत से मुख्य कार्यकर्ता डी.ए.वी. स्कूल से असन्तुष्ट हो गये थे । जालन्धर के आर्य जनों का ध्यान कन्याओं की शिक्षा की विशेष रूप से आकृष्ट हुआ । उनके नेता लाला देवराज जी तथा लाला मुन्शीराम जी ( जो संन्यासी होकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए ) थे । इन दोनों के नेतृत्व में जालन्धर आर्यसमाज ने कन्या विद्यालय खोलने का निश्चय किया । प्रारम्भ बहुत ही छोटा-सा किया गया था । १८८६ में समाज ने एक जनाना स्कूल खोला और उसके लिए एक रूपया मासिक देना स्वीकार किया । उस समय के समाचार पत्रों से विदित होता है कि उस एक रुपए में छः कन्यायें प्रारम्भिक शिक्षा पाती थीं । वेतन कम होने से अच्छी अध्यापिका न मिलीं जिसका परिणाम यह हुआ कि लड़कियाँ आठ से घट कर दो रह गई ।

उन दिनों जालन्धर में ईसाईयों का एक गर्ल्स स्कूल चल रहा था । आर्यसमाजियों की लड़कियाँ उसमें जाने लगीं । तब आर्यसमाज में विशेष चेतना उत्पन्न हुई । १८९१ के जुलाई मास में आर्यसमाज की ओर से विधिपूर्वक कन्या पाठशाला का उद्घाटन हुआ । बड़ा यज्ञ किया गया। लाला मुन्शीराम जी ने प्रार्थना की और लाला देवराज जी ने धनसंग्रह के लिए अभ्यर्थना की । इस तरह इस विशाल कन्या महाविद्यालय की स्थापना हुई । जिसने थोड़े ही दिनों में आशातीत उन्नति की। हम कह सकते हैं कि जैसे

कि डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना ने देशभर के आर्यसमाजों में बालक शिक्षा के लिए बलवती प्रेरणा उत्पन्न की इसी प्रकार जालन्धर के कन्या महाविद्यालय ने देश भर के आर्यजनों का ध्यान कन्याओं की शिक्षा की ओर आकृष्ट किया जिसके परिणाम स्वरूप थोड़े ही समय में अनेक कन्या विद्यालय स्थापित हो गए । कन्या विद्यालय की ख्याति कुछ ही दिनों में इतनी फैल गई कि उसके कारण जालन्धर शहर भी मशहूर हो गया । सन् १९१६ में पंजाब के लैफ्टिनेण्ट गवर्नर सर माइकल ओड्वायर ने सम्मति पुस्तक में लिखा था कि जालन्धर कोई ऐतिहासिक स्थान नहीं है लेकिन कन्या महाविद्यालय ने इसे देशभर में मशहूर कर दिया । इस प्रकार बंगाल में श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने और दक्षिण में जस्टिस महादेव गोविन्द रानडे तथा प्रो. कर्वे ने स्त्री-शिक्षा के लिए कार्य किया था उत्तरीय भारत में वह कार्य महर्षि आदेश के अनुसार आर्यसमाज ने किया।

कन्या महाविद्यालय की स्थापना और उन्नति का अन्य सबकी अपेक्षा अधिक श्रेय उसके प्रथम अधिष्ठाता ला. देवराज जी को था । ला. देवराज जी उन प्रारम्भिक आर्यपुरुषों में थे जिनके अटल धर्म-प्रेम, सेवा-भाव और स्वार्थत्याग ने ऋषि दयानन्द के मिशन को देश की गहराई तक पहुँचा दिया था । आपने जालन्धर के अति समृद्ध घराने में जन्म लिया था । बचपन से ही आपका झुकाव धर्म की ओर था । सोलह साल की आयु में आपने अपने नाम के साथ "सत्यार्थप्रकाश" का उपनाम लगा दिया था, जो उनके सत्यप्रेम को सूचितकरता था । युवावस्था के प्रारम्भ में आपके हृदय में वैदिक धर्म का प्रेम उत्पन्न हो गया और आप जालन्धर आर्यसमाज के पहले मन्त्री बने । उस दिन आपने धर्म की सेवा का जो व्रत लिया उस पर जीवन के अन्त तक दृढ़ रहे । कन्या महाविद्यालय के तो आप जीवन प्राण थे । आप उसके सभी कुछ थे । कन्याओं के लिए उपयोगी साहित्य तैयार करते थे, उन्हें पढ़ाते थे और माँ के स्थानापन्न बनकर उनकी पालना करते थे । जिन कन्याओं ने उनकी छत्रछाया में रहकर शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की है वे आज तक भी अपने चाचाजी को बहुत प्रेम करती हैं और उनकी याद में आँसू बहाती हैं । कन्याओं और उनकी शिक्षा के प्रति उनका यही अद्भुत प्रेम था जिसने उन्हें अधिक शिक्षित अथवा शास्त्री न होते हुए भी ऐसी विशाल शिक्षण संस्था को चलाने की शक्ति प्रदान की ।

शीघ्र ही कन्याओं को शिक्षा देने का उत्साह देश भर के आर्य जनों में फैल गया । संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी प्रायः सभी बड़े-बड़े नगरों की आर्यसमाजों के साथ कन्या पाठशालायें स्थापित हो गई । देहरादून, सहारनपुर, रूड़की, मुजफ्फरनगर, मथुरा, मैनपुरी, शाहजहाँपुर, पीलीभीत, इटावा, झाँसी, बनारस, लखनऊ, दिल्ली आदि बड़े शहरों और अनेक कस्बों और गाँवों में भी पाठशालायें खुलने के समाचार पुराने आर्यसमाजिक पत्रों में मिलते हैं । बम्बई प्रदेश में आर्य-विद्या-सभा-नाम की एक सभा रजिस्टर्ड कराई गई जिसकी ओर से अन्य प्रकार की शिक्षाओं के साथ-साथ कन्याओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध किया गया । कुछ समय पीछे बंगाल की राजधानी कलकत्ता में भी एक विशाल कन्या पाठशाला स्थापित हुई जो निरन्तर उन्नति करती हुई एक शानदार संस्था के रूप में परिणत हो गई ।

पंजाब के कन्या महाविद्यालय के बनने के पश्चात् स्त्री-शिक्षा की मानो बाढ़-सी आ गई । प्राय: हरेक समाज के साथ कन्या पाठशालायें तो खुली ही, अनेक स्थानों पर विधवा-आश्रम और अनाथ-कन्या-आश्रम भी स्थापित हुए । पंजाब के दोनों दलों में मानो होड़ सी लग गई । कॉलेज विभाग के लाग स्कूल खोलने में और महात्मा पार्टी के लोग कन्याओं को शिक्षा का प्रबन्ध करने में जी-जान से लग गए ।

## अनाथालय

इसी प्रकरण में अनाथालयों की स्थापना की चर्चा कर देना भी अप्रासंगिक न होगा । अनाथ लड़की और लड़कियों की रक्षा के लिए सम्भवत: पहला अनाथालय अजमेर में बना । उसके पश्चात् अनेक केन्द्रों में अनाथालय स्थापित हुए । सन् १८९६ ई. में मध्यप्रदेश में बहुत बड़ा अकाल पड़ा । वहाँ कार्य करने के लिए अन्य प्रान्तों के कार्यकर्ता पहुंचे जिनका नेतृत्व लाला लाजपतराय जी ने किया । उन दिनों लालाजी ने अनाथों की दयनीय दया पर आर्यसमाजों के उत्सवों में जो व्याख्यान दिए उन्होंने श्रोताओं के हृदयों को द्रवित कर दिया । लाला जी वक्तृत्वशक्ति दिनों दिन परिमार्जित और ओजस्विनी होती जा रही थी । मध्यप्रदेश से आये हुए अनाथ बालक-बालिकाओं के लिए लाहौर में जो शिशु आश्रम खोला गया उसके मुख्य कार्यकर्ता आर्यसमाजी लोग ही थे । उस संस्था के लिए हिन्दू जनता ने खूब जी खोलकर आर्थिक सहायता दी ।

धीरे-धीरे कन्या पाठशाला, विधवा आश्रम और अनाथालयों का संचालन आर्यसमाज के कार्यक्रम का एक भाग सा बन गया । आर्यसमाज के अनुकरण में उत्तरीय भारत के प्राय: सभी धार्मिक समाजों ने किसी न किसी रूप में कन्या शिक्षणलय और अनाथालय चलाने की प्रवृत्ति को ग्रहण कर लिया। भारत के उत्तर पूर्व के प्रान्तों में स्त्रियों में जो अद्‌भुत जागृति दिखाई देती है उसका बहुत-सा श्रेय आर्यसमाज को है । इतना तो सभी को मानना पड़ेगा कि इस दिखा में मार्गप्रदर्शन आर्यसमाज ने किया ।

## वैदिक पध्दति से सामूहिक विवाह संस्कार कराया

नव ज्योति विकास संस्थान और मानव सेवा संस्थान के तत्वावधान में मौलाना आजाद विश्वविद्यालय में मिति फाल्गुन कृष्णपक्ष ८ संवत् २०७६ विक्रमी रविवार १६ फरवरी २०१९ को आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर के तत्वावधान में जोधपुर की आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं द्वारा सर्व हिन्दू जाति के ४० जोड़ों का सामूहिक विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक पध्दति से सम्प्पन करवाया गया।

कार्यक्रम से सफल आयोजन में मुख्य सहयोग नगर आर्यसमाज गुलाबसागर,आर्यसमाज सरदारपुरा, आर्यसमाज सूरसागर, आर्यसमाज महामंदिर, आर्यसमाज मगरा पूंजला, आर्यसमाज जालोरियॉ का बास, आर्यसमाज शास्त्री नगर व श्री बृजेशकुमार सिंह जी के साथ ही वरिष्ठ आर्यवीरद्वय श्री गणपतसिंहजी चौहान एवं आर्य दिलीपसिंहजी पॅवार का रहा।

न्यास की ओर से सभी को धन्यवाद! फोटुएँ अन्तिम आवरण पृष्ठ पर देखें।

# अथ गृहाश्रमसंस्कारविधि वक्ष्यामः

(महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने संस्कार विधि में सोलह संस्कारों की विधि तो दी ही है, विवाह संस्कार के साथ गृहस्थ के कर्तव्यों के रूप में भी बहुत कुछ लिखा है, जो सामान्यतः विवाह संस्कार के समय बताया नहीं जाता है जिसका कारण अधिकांशतः समय की कमी ही होता है। यह गृहस्थ को स्वर्ग बनाने का साधन है। इसलिए इसे पत्रिका में धारावाहिक रूप से दिया जा रहा है। इस प्रकरण के अर्थसहित १६ मंत्र के आगे पढ़ें–संपादक)

**सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्रुष्टीन्त्संवननेनसर्वान् ।**
**देवा इवामृतंरक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वोअस्तु ।।२०।।**

—अथर्व0कां0३ ।सू0३0 ।मन्त्र१–७ ।।

हे गृहस्थादि मनुष्यों! मैं ईश्वर **(वः)** तुम को **(सध्रीचीनान्)** सहवर्त्तमान, **(संमनसः)** परस्पर के लिये हितैषी, **(एकश्रुष्टीन्)** एक हीधर्मकृत्य में शीघ्र प्रवृत्त होनेवाले **(सर्वान्)** सब को **(संवननेन)**धर्मकृत्यके सेवन के साथ एक–दूसरे के उपकार में नियुक्त **(कृणोमि)** करताहूँ। तुम **(देवा इव)** विद्वानों के समान **(अमृतम्)** व्यावहारिक वा पारमर्थिक सुख की **(रक्षमाणाः)** रक्षा करते हुए **(सायंप्रातः)** सन्ध्याऔर प्रातःकाल अर्थात् सब समय में एक–दूसरे से प्रेमपूर्वक मिला करो।ऐसे करते हुए **(वः)** तुम्हारा **(सौमनसः)** मन का आनन्दयुक्त शुद्धभाव**(अस्तु)** सदा बना रहे ।।२०।।

**श्रमेणतपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिताः ।।२१।।**
**सत्येनावृताः श्रिया प्रावृतायशसापरीवृताः ।।२२।।**
**स्वधयापरिहिताः श्रद्धयापर्यूढा दीक्षयागुप्तायज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम् ।।२३।।**

**अर्थः** –हे स्त्रीपुरुषो ! मैं ईश्वर तुम को आज्ञा देता हूं कि तुमसब गृहस्थ मनुष्य लोग **(श्रमेण)** परिश्रम तथा **(तपसा)** प्राणायाम से **(सृष्टाः)** संयुक्त, **(ब्रह्मणा)** वेदविद्या, परमात्मा और धनादि से **(वित्ते)** भोगने योग्य धनादि के प्रयत्न में, और **(ऋते)** यथार्थ पक्षपात रहित न्यायरूप धर्म में **(श्रिताः)** चलनेहारे सदा बने रहो ।।२१।।

**(सत्येन)** सत्यभाषणादि कर्मों से **(आवृताः)** चारों ओर से युक्त,**(श्रिया)** शोभा तथा लक्ष्मी से **(प्रावृताः)** युक्त, **(यशसा)** कीर्ति औरधन से **(परीवृताः)** सब ओर से संयुक्त रहा करो ।।२२।।

**(स्वधया)**अपने ही अन्नादि पदार्थ केधारण से **(परिहिताः)** सबके हितकारी, **(श्रद्धया)** सत्य धारण में श्रद्धा से **(पर्यूढाः)** सब ओर से सब को सत्याचरण प्राप्त करानेहारे, **(दीक्षया)** नाना प्रकार के ब्रह्मचर्य, सत्यभाषणादि व्रत धारण से **(गुप्ताः)** सुरक्षित, **(यज्ञे)** विद्वानों के सत्कार, शिल्पविद्या और शुभ गुणों के दान में **(प्रतिष्ठिताः)** प्रतिष्ठा को प्राप्तहुआ करो। और इन्हीं कर्मों से **(निधनं लोकः)** इस मनुष्यलोक को प्राप्त

होके मृत्युपर्यन्त सदा आनन्द में रहो ।।२३।।

**ओजश्चतेजश्चसहश्चबलं चवाक् चेन्द्रियं चश्रीश्चधर्मश्च ।।२४।।**

**अर्थः**–हे मनुष्यों! तुम जो **(ओजः)** पराक्रम **(च)** और इस कीसामग्री, **(तेजः)** तेजस्वीपन **(च)** और इस की सामग्री, **(सहः)** स्तुति–निन्दा हानि–लाभ तथा शोकादि का सहन **(च)** और इस के साधन, **(बलं च)** बल और इस के साधन, **(वाक् च)** सत्य प्रियवाणी और इस के अनुकूल व्यवहार, **(इन्द्रियं च)** शान्त धर्मयुक्त अन्तःकरण और शुद्धात्मा तथा जितेन्द्रियता, **(श्रीश्च)** लक्ष्मी सम्पत्ति और इस की प्राप्ति का धर्मयुक्त उद्योग, **(धर्मश्च)** पक्षपात रहित न्यायाचरण, वेदोक्त धर्म और जो इस के साधन वा लक्षण हैं, उन कोतुम प्राप्त होके इन्हीं में सदा वर्त्ता करो ।।२४।।

**ब्रह्मच क्षत्रं चराष्ट्रं चविशश्चत्विषिश्चयशश्चवर्चश्च द्रवि.ं च ।।२५।।**
**आयुश्च रूपं चनामच कीर्तिश्चप्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रंच ।।२६।।**
**पयश्चरसश्चान्नंचान्नाद्यं च ऋतं चसत्यं चेष्टं चपूर्तं चप्रजा चपशवश्च।।२७।।**

–अथर्व0कां0१२। अ.५। वर्ग १–२।।

**अर्थः** –हे गृहस्थादि मनुष्यों! तुम को योग्य है कि **(ब्रह्म च)** पूर्णविद्यादि शुभ गुणयुक्त मनुष्य और सब के उपकारक शम, दमादि गुणयुक्त ब्रह्मकुल, **(क्षत्रं च)** विद्यादि उत्तम गुणयुक्त तथा विनय और शौर्यादि गुणों से युक्त क्षत्रियकुल **(राष्टं च)** राज्य और उस का न्यायसे पालन, **(विशश्च)** उत्तम प्रजा और उस की उन्नति, **(त्विषिश्च)** सद्विद्यादि से तेज आरोग्य, शरीर और आत्मा के बल से प्रकाशमान,और इस की उन्नति से **(यशश्च)** कीर्तियुक्त तथा इस के साधनों को प्राप्त हुआ करो। **(वर्चश्च)** पढ़ी हुई विद्या का विचार और उस कानित्य पढ़ना,**(द्रविणं च)** द्रव्योपार्जन, उस की रक्षा और धर्मयुक्त परोपकार में व्यय करने आदि कर्मों को सदा किया करो ।।**२५**।।

हे स्त्रीपुरुषो! तुम अपना **(आयुः)** जीवन बढ़ाओ, **(च)** और सबजीवन में धर्मयुक्त उत्तम कर्म ही किया करो। **(रूपं च)** विषयासक्ति कुपथ्य रोग और अधर्माचरण को छोड़ के अपने स्वरूप को अच्छा रक्खो और वस्त्राभूषण भी धारण किया करो, **(नाम च)** नामकरण के प्रकरण में लिखे प्रमाणे शास्त्रोक्त संज्ञाधारण और उसके नियमों को भी **(कीर्तिश्च)** सत्याचरण से प्रशंसा का धारण, और गुणों में दोषारोपण रूप निन्दा को छोड़ दो। **(प्राणश्च)** चिरकालपर्यन्त जीवन का धारण औरउस के युक्ताहार विहारादि साधन, **(अपानश्च)** सब दुःख दूर करने काउपाय और उस की सामग्री, **(चक्षुश्च)** प्रत्यक्ष और अनुमान, उपमान,**(श्रोत्रं च)** शब्दप्रमाण और उस की सामग्री को धारण किया करो ।।२६।।

हे गृहस्थ लोगों! **(पयश्च)** उत्तम जल दूध और इस का शोधन और युक्ति से सेवन, **(रसश्च)** घृत, दूध, मधु आदि और इस का युक्ति से आहार–विहार, **(अन्नं च)** उत्तम चावल

आदि अन्न और उस के उत्तम संस्कार किये (**अन्नाद्यं च**) खाने योग्य पदार्थ और उस के साथ उत्तम दाल, शाक, कढ़ी आदि, (**ऋतं च**) सत्य मानना और सत्य मनवाना,(**सत्यं च**) सत्य बोलना और बुलवाना (**इष्टं च**) यज्ञ करना और कराना,(**पूर्त्तंच**) यज्ञ की सामग्री पूरी करना तथा जलाशय और आरामवाटिका आदि का बनाना और बनवाना, (**प्रजा च**) प्रजा की उत्पत्ति पालन औरउन्नति सदा करनी तथा करानी, (**पशवश्च**) गाय आदि पशुओं का पालनऔर उन्नति सदा करनी तथा करानी चाहिये ।।२७।।

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ् समाः।**
**एवं त्वयिनान्यथेतोऽस्तिन कर्मलिप्यतेनरे।।१।।** –य० अ० ४०। मन्त्र२ ।।

**अर्थः** –मैं परमात्मा सब मनुष्यों के लिए आज्ञा देता हूं कि सबमनुष्य (**इह**) इस संसार में शरीर से समर्थ होके (**कर्माणि**) सत्कर्मों को (**कुर्वन्नेव**) करता ही करता (**शतं समाः**) १०० सौ वर्ष पर्यन्त (**जिजीविषेत्**) जीने की इच्छा करे, आलसी और प्रमादी कभी न होवे। (**एवम्**) इसी प्रकार उत्तम कर्म करते हुए (**त्वयि**) तुझ (**नरे**) मनुष्य में (**इतः**) इस हेतु से (**अन्यथा**) उलटा पापरूप (**कर्म**) दुःखद कर्म (**न लिप्यते**) लिप्यमान कभी नहीं होता, और तुम पापरूप कर्म में लिप्त कभी मत होओ। इस उत्तम कर्म से कुछ भी दुःख (**नास्ति**) नहीं होता। इसलिये तुम स्त्रीपुरुष सदा पुरुषार्थी होकर उत्तम कर्मों से अपनी और दूसरों की सदा उन्नति किया करो ।।१।।

पुनः स्त्रीपुरुष सदा निम्नलिखित मन्त्रों के अनुकूल इच्छा और आचरण किया करें। वे मन्त्र ये हैं–

**भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभि स्याँ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।**
**नर्य प्रजां मे पाहि। शँस्य पशून्मे पाहि। अथर्य पितुं मे पाहि ।।२।।**
**गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि।**
**ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः।।३।।**
–यजु० अ०३। मन्त्र ३७, ४१।।

**अर्थः** –हे स्त्री वा पुरुष ! मैं तेरा वा अपने के सम्बन्ध से (**भूर्भुवः स्वः**) शारीरिक, वाचिक और मानस अर्थात् त्रिविध सुख से युक्त होके (**प्रजाभिः**) मनुष्यादि उत्तम प्रजाओं के साथ (**सुप्रजाः**)उत्तम प्रजायुक्त (**स्याम्**) होऊँ। (**वीरैः**)उत्तम पुत्रा बन्धु सम्बन्धी और भृत्यों से सह वर्तमान (**सुवीरः**)उत्तम वीरों से सहित होऊँ। (**पोषैः**)उत्तम पुष्टिकारक व्यवहारोंसे (**सुपोषः**)उत्तम पुष्टियुक्त होऊँ। हे (**नर्य**) मनुष्यों में सज्जन वीर स्वामिन्! (मे) मेरी (**प्रजाम्**) प्रजा की (**पाहि**) रक्षा कीजिये। हे (**शंस्य**) प्रशंसा करने योग्य स्वामिन्! आप (**मे**) मेरे (**पशून्**) पशुओं की (**पाहि**) रक्षा कीजिये। हे (**अथर्य**) अहिंसक दयालो स्वामिन्! (**मे**) मेरे (**पितुम्**) अन्न आदि की (**पाहि**) रक्षा कीजिये। वैसे हे नारी! प्रशंसनीय गुणयुक्ततू मेरी प्रजा मेरे पशु और मेरे अन्न की सदा रक्षा किया कर ।।२।।

हे(**गृहाः**) गृहस्थ लोगां! तुम विधिपूर्वक गृहाश्रम में प्रवेश करनेसे (**मा बिभीत**) मत

डरो, (**मा वेपध्वम्**) मत कम्पायमान होओ। (**ऊर्ज्जम्**) अन्न पराकम तथा विद्यादि शुभ गुण से युक्त होकर गृहाश्रम को (**बिभ्रतः**) धारण करते हुए तुम लोगों को हम सत्योपदेशक विद्वान् लोग (**एमसि**) प्राप्त होते और सत्योपदेश करते हैं और अन्नपानाच्छादन–स्थान से तुम्हीं हमारा निर्वाह करते हो। इस लिये तुम्हारा गृहाश्रम व्यवहार मेंनिवास सर्वोत्कृष्ट है। हे वरानने! जैसे मैं तेरा पति (**मनसा**) अन्तःकरणसे (**मोदमानः**) आनन्दित (**सुमनाः**) प्रसन्न मन (**सुमेधः**) उत्तम बुद्धि से युक्त मुझ को, और हे मेरे पूजनीयतम पिता अदि लोगो! (**वः**) तुम्हारे लिये (**ऊर्ज्जम्**) पराकम तथा अन्नादि ऐश्वर्य को (**बिभ्रत्**) धारण करता हुआ तुम (**गृहान्**) गृहस्थों को (**आ एमि**) सब प्रकार से प्राप्त होता हूँ, उसी प्रकार तुम लोग भी मुझ से प्रसन्न होके वर्ता करो ।।३।।

## भजन प्रतियोगिता सूचना

सभी आर्यो धर्मप्रेमी सज्जनो को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन के सत्संग भवन में मिति चैत्र कृष्णपक्ष शष्ठी संवत् २०७६ विक्रमी शनिवार १४ फरवरी २०१६ को सांय 5 से 8 बजे तक साप्ताहिक यज्ञोपरान्त वासन्ती नवसस्येष्टि स्नेह मिलन भजन प्रतियोगिता के साथ मनाया जाएगा।

न्यास के उपमंत्री श्री यशपाल आर्य के अनुसार इस कार्यक्रम में प्रतियोगियों द्वारा परमात्मा की भक्ति, ऋषि दयानन्द गुणगाान, वैदिक धर्मसंबंधी और अन्य वे सभी गीत या समूहगान का गायन किया जा सकेगा जो आर्य समाज के उत्सवों में गाये जाते है।

प्रत्येक प्रतियोगी को ५ मिनट का समय दिया जाएगा। सभी प्रतियोगियों को भजन, गीत या कोरस अपनी स्मरण शक्ति से, बिना काग– पुस्तक–मोबाइल में देखे गाने होंगे। कृपया अपने अपने आर्यसमाज से प्रतियोगियों के नाम 12 मार्च तक भिजवाएं। अधिकतम २० प्रतियोगी भाग ले सकेंगे। इस प्रतियोगिता में निर्णायको द्वारा अंक प्रदान किये जायेंगे व प्रतियोगियों को पारितोषिक प्राप्त अंकों के अनुसार प्रदान किया जाएगा। यह कार्यक्रम जोधपुर की समस्त आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। पारितोषिक स्मृति भवन न्यास द्वारा दिया जाएगा। अतः सभी आर्यो से निवेदन है कि प्रतियोगियों के नाम यथा शीघ्र देवें। पहले आओ पहले पाओ के अनुसार २० प्रतियोगी के नाम प्राप्त हो जाने पर पंजीयन बन्द कर दिया जाएगा। पंजीयन श्री गौरवजी आर्य, श्री यशपालजी आर्य, आर्य किशनलालजी गहलोत, स्मृति भवन न्यास में दूरभाष सं 2516655 पर श्री नारायण सिंह जी को प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

## आर्यसमाज दाल बाजार लुधियाना में ऋषि दयानंद बोध पर्व पर महायज्ञ के आयोजन की झलकियाँ

## आर्यसमाज हिरण मगरी उदयपुर में महर्षि दयानंद जयन्ती पर शोभायात्रा के आयोजन की झलकियाँ।

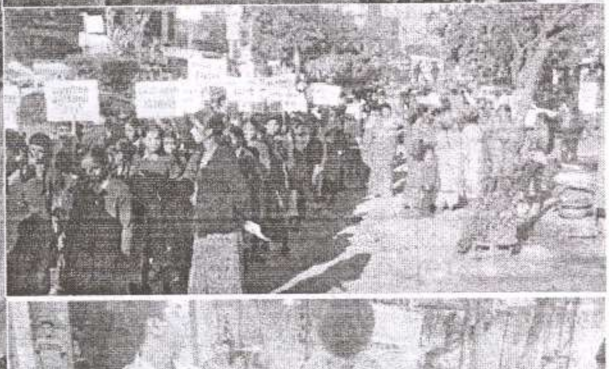

(सूचना किए जाने के बाद भी आर्यसमाज के पत्रक पर सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर से समाचार अप्राप्त हाने से अनधिकृत समाचार नहीं दिए जा रहेः सं0)

# खुशियाँ ऐसे भी मनाएँ और बाँटें

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास मे मंत्री आर्य किशनलाल गहलोत के

सुपौत्र आयुष्मान आर्येन्द्र सुपुत्र श्री महेन्द्र का जन्मोत्सव मिति माघ भुक्ल चतुर्दशी संवत् २०७६ विकमी शनिवार ०८ फरवरी २०१६ को न्यास के नियमित साप्ताहिक सत्संग के साथ ही मनाया गया। इस अवसर पर आयुष्मान आर्येन्द्र के साथ ही उपस्थित परिजनों, स्वजनों और आर्यजनों द्वारा पं० डॉ० रामनारायणजी शास्त्री एवं पं० विमलजी शास्त्री के पौरोहित्य में कराए यज्ञ में बालक की दीर्घायु की कामना के साथ विशेष आहुतियाँ दी गयीं।

मंत्रीजी द्वारा इस अवसर पर भोज का आयोजन किया गया और उपस्थित बालकों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरुक करने के लिए खेल खेल में शिक्षा देने वाली बालोपयुक्त सजावट की गई थीं।

इस कार्यक्रम की एक विशेष बात और भी थी कि बालक को धनराशि देने आगन्तुकों को इच्छित राशि आर्य गहलोत परिवार द्वारा स्वीकार न करके महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास को दान देने हेतु प्रेरित किया गया।

आर्यजन यदि अपने स्वजनों और परिजनों से जुड़े विशेष दिनों और अवसरों को आर्यसमाजों और आर्यसंस्थाओं में आयोजित करना आरंभ करे तो उत्तम फल ही मिलेगा।

# महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती मनाई गई

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा मिति चैत्र फाल्गुन कृष्णपक्ष १० संवत् २०७६ विक्रमी मंगलवार १८ फरवरी २०१६ को महर्षि दयानन्द जी की जयन्ती स्मृति भवन की भव्य यज्ञ शाला में सांय साढ़े पॉच बजे बजे से आठ बजे तक यज्ञ भजन प्रवचन के साथ सभी आर्यसमाजो के संयुक्त सहयोग से मनाई गई।

यज्ञोपरान्त आर्य समाज सरदारपुरा के संरक्षक और वयोवृद्ध आर्य समाजी श्री हरेंद्र कुमार जी गुप्ता ने महर्षि के जीवन का परिचय देते हुए एक गीत "वही पूज्य गुरु है दयानंद मेरा..." महर्षि को समर्पित किया। आर्य वीरांगना अदिति ने 'योगी आया था एक वेदों वाला, किया उजियारा, वेदों के सच्चे ज्ञान का, वो तो देवता था सारे ही जहान का...' प्रस्तुत किया। श्री अभिमन्युजी आर्य ने ऋषि गुणगान का गीत'सूरज वन जिसने दूर किया पापों का घोर अंधेरा, वो देव दयानंद मेरा....' प्रस्तुत किया।

पंडित विमल जी शास्त्री ने महर्षि दयानंद का गुणगान करते हुए बताया कि महर्षि के जन्म के समय राष्ट्र गुलाम था, देशहित की बात, धर्महित की बात कोई राजा महाराजा चिंतक या दार्शनिक या नेता सोच ही नहीं रहा था; धर्म के क्षेत्र में तप के क्षेत्र में अग्रणी लोग सिर्फ अपने लिए साधना करते थे, हिमालय की कंदराओं में या मठ मंदिरों में बैठे जड़ आराधना कर रहे थे; कोई भी राष्ट्र आराधना नंहीं कर रहा था। ऐसे समय में महर्षि दयानंद सरस्वती ने अकेले स्वतंत्रता की ज्योति निर्भय होकर जगाई और रियासतों के संचालकों से लेकर क्रांति के सिपाहियों तक को प्रेरित कर भारत की स्वतंत्रता के मार्ग को प्रशस्त किया था। ऐसे ही कारणों से महर्षि दयानंद पूर्व की, पश्चात की और समकालीन विभूतियों से विरले थे, सबसे उच्च मस्तक वाले हैं, उच्च भाल वाले हैं। देश और समाज की दुर्दशाथी, जीव हत्या, ब्रह्म हत्या, नारी उत्पीड़न, अंधविश्वास, कुरीतियॉ, यहॉ तक कि समाज और राष्ट्र में नारी को नर्क का द्वार घोषित कर दिया था। उन्होंने बताया कि लोग गंगोत्री से लेकर गंगासागर की यात्रा अंधविश्वास में पड़कर करते थे और करते हैं। किंतु भारत दुर्दशा के ऐसे समय में मूलशंकर ने सत्य की खोज के लिए टंकारा से अजमेर तक की यात्रा अनगिनत कष्टों को झेलकर की थी। सत्यान्वेषण करने के लिए, महर्षि का जीवन चरित्र लिखने के लिए महर्षि की इस टंकारा से अजमेर तक की यात्रा का अनुसरण बाबू देवेंद्रनाथ मुखोपाध्याय ने भी किया और इस यात्रा को तीर्थ यात्रा बताया, जिसके बाद उन्होंने महर्षि जीवनचरित्र लिखा। विमलजी ने कहा कि एक शंकर विश को गले में धारण कर लेने से आज तक पूजनीय बने हुए हैं। दूसरे शंकर ने एक बार विषपान कर अल्पायु में देह त्याग दी और विश्व में प्रसिद्ध हो गए। किंतु हमारे मूलशंकर ने तो दयानंद बनके १७ बार विष पिया। ऐसी विभूति की क्षमता कौन कर सकता है! विश के कारण वे दक्षिण भारत की यात्रा महाराष्ट्र से आगे नहीं कर सके। किंतु देश देशांतर में महर्षि का लगाया आर्यसमाज रूपी पौधा फलीभूत हो रहा है, जिसकी मूल में मूलशंकर ने सृष्टि के मूल वेदविद्या से सिंचन किया है। हमें भी इसे हरा–भरा रखने का प्रयत्न

करना चाहिए। श्री विमल जी ने आर्य जगत के वयोवृद्ध इतिहासकार प्रहरी आदरणीय डॉक्टर राजेंद्र जी जिज्ञासुजी के अस्वस्थता की जानकारी दी। सभी आर्यजनों ने जिज्ञासुजी की दीर्घायु और स्वस्थ सक्रिय जीवन हेतु मंगल कामना की।

श्री विक्रम सिंह आर्य ने इस अवसर पर ऋषि प्रशंसा में भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना योगी प्रस्तुत किया। सूरसागर के वयोवृद्ध आर्यसमाजी श्रीमान नृसिंहजी ने महर्षि के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के १४ समुल्लासो में वर्णित विषयों को काव्यात्मक रूप से संक्षिप्त में प्रस्तुत किया। वैकल्पिक चिकित्सा विशेषज्ञ श्री सन्तु सिंह जी मेड़तिया ने महर्षि के योगाभ्यास को रेखांकित करते हुए सभी से प्रतिदिन योग करते हुए शरीर को स्वस्थ रखने और ध्यान करते हुए मनोमस्तिष्क को स्वस्थ रखने का आग्रह किया।

कमल किशोर आर्य ने इस अवसर पर महर्षि दयानंद की विशेषताएँ बताते हुए कहा कि मतवादियों और सांप्रदायिकों के बोलबाले के समय में भी धर्म के मर्म को महर्षि ने समझा और सांप्रदायिकता एवं संकीर्णताओं पर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि धर्म की पालना से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व का पतन नहीं हो सकता, सृष्टि दूषित नहीं हो सकती, किसी भी प्राणी का अहित नहीं हो सकता। इस कसौटि पर विभिन्न मत सम्प्रदायों को कस कर उनके धर्म या असत्य सम्प्रदाय होने का निर्णय किया जा सकता है। उदाहरण देते हुए उन्होनें एक आख्यान सुनाया कि एक मुस्लिम बने परिवार की वृद्धा ने रामनवमी पर मिठाई बॉटी। मुसलमानों ने जब ऐतराज किया तो वृद्धा ने कहा कि मत बदला है, पुरखे नहीं, तो सब चुप हो गए। यह तो पूर्व के संस्कार थे, जो पुरखों को जोड़ रहे थे। किन्तु भारत के लगभग सब मुसलमान परिवर्तित हैं। क्या वे अपने पुरखों श्रीराम, श्री कृष्ण आदि को अपना पुरखा मानते हैं? बामियान की विश्व धरोहर पूजा नहीं की जा रही बौद्ध मूर्तियों को भी नष्ट करने का उदाहरण देकर बताया कि यह असहिष्णुता मानव का पतन है, जो बताता है कि व्यक्ति धर्म से दूर दानवता का दास है। इससे विश्व में विष भरता है। हमारी संस्कृति में स्वगौत्र और स्वपिण्ड रिश्तों में विवाह संबंध वर्जित है जो पूर्णतः विज्ञान सम्मत है। किन्तु मत बदलने से स्वकुल में ही विवाह होते हैं तो यह मानव, परिवार और समाज का पतन है। उन्होनें कहा कि सिर्फ हिन्दुओं में जातिप्रथा ही जन्म से नहीं हो रही है। मत सम्प्रदायों का निर्धारण भी जन्म से होता जा रहा है। बुद्धि एवं विवेकपूर्वक तर्क, युक्ति, प्रमाण, औचित्य और संवाद का अभाव होता जा रहा है। महर्षि ने इन अभावों को दूर करने में अपना जीवन झौंक दिया। धर्म की समझ, अधर्म के कारणों का निदान और अचूक उपचार करते हुए महर्षि ने बारम्बार विष पीते हुए, पत्थर और गालियॉ खाते हुए भी ऐषणाओं से परे, कोई नया मत पंथ नहीं चलाते हुए खण्डन के खाण्डे से असत्य पर प्रहार करते हुए वेदों की ओर लौटने का, अपने ही घर लौटने की पुकार की थी। इसी लिए महर्षि जैसे महामना का जन्मदिवस विशेष है।

न्यास के मंत्री आर्य किशनलाल गहलोत ने सभी का धन्यवाद करते हुए महर्षि के मिशन के लिए तन, मन, धन और समय देने की प्रार्थना की। कार्यक्रम के अंत में पधारे हुए सभी आर्यो ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। फोटुएँ आवरणपृष्ठ ३ पर देखें।

# ऋषि बोधोत्सव मनाया

शिवरात्रि को महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा फागुन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी संवत् २०७६ विक्रमी शुक्रवार २१ फरवरी २०२० की सांय 5,30 बजे से महर्षि दयानंद स्मृति भवन की भव्य यज्ञशाला में ऋषि बोधोत्सव पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। डॉक्टर रामनारायणजी शास्त्री के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञोपरांत इस अवसर पर श्री विक्रमसिंह आर्य ने कविवर प्रकाशजी का गीत 'मधुर वेद वीणा बजाए चला जाण्ण' गाया। श्री बलवीर जी आर्य ने 'संसार से भागे फिरते हो, भगवान को तुम क्या पाओगे...' सुनाया। न्यास के मंत्री आर्य किशनलाल जी गहलोत ने एक भजन 'तुम करो प्रभु से प्यार अमृत बरसेगा...' प्रस्तुत किया।

आगंतुक आर्यजनों को संबोधित करते हुए डॉक्टर रामनारायण जी शास्त्री ने आर्य समाज के लिए इस पर्व का विशेष महत्व बताया। मूलशंकर के दयानंद बनने की शुरुआत इस दिन से हुई थी। शास्त्री जी ने भारत के तीन शंकरों अर्थात् कल्याणकर्ताओं का वर्णन किया। पहले योगी कैलाशपति शंकर, जिन्होंने सर्वहिताय कंठ को विषमय बनाया और सबके प्रिय हो गए। यह अलग बात है कि धूर्तों ने उन्हें नशेड़ी बता दिया। दूसरे शंकर आचार्य श्री शंकर ने नास्तिक मतों पर प्रहार करते हुए छल से विषघात के शिकार बने और दिवंगत हुए। अल्पायु में ही अपने अच्छे कल्याणकारी कार्यों के लिए वह भी आज सम्मान पाते हैं। तीसरे प्रसिद्ध शंकर हमारे मूलशंकर यानि महर्षि दयानंद सरस्वती है। इन्होंने विष, मात्र एक बार नहीं पिया, किंतु १७ बार पिया। १६ बार उन्होंने विश्व को निष्फल कर दिया। किंतु १७वीं बार वे न केवल विष के, किंतु सत्ताओं और धर्म के ठेकेदारों के हाथों शड्यन्त्र, उपेक्षा और उपचार के नाम पर घातक प्रयोंगों और घातक पदार्थों के शिकार होकर बच नहीं पाए। जीवन में दुष्ट लोगों की गालियां खाते रहे, पत्थर झेले, प्रताड़ना झेली, धमकियां झेलीं, अपमान झेला; किंतु सत्य के मार्ग से विचलित नहींहुए। महर्षि दयानन्द सरस्वती हमें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के कल्याण का सच्चा मार्ग बता कर गए हैं। उनके बताए मार्ग की काट या विकल्प कहीं भी किसी के भी पास नहीं है। इस नि्िकल्प मार्ग पर हम सब चलने का अधिकतम प्रयास करें।

इस अवसर पर वैकल्पिक चिकित्सा विशेषज्ञ श्री संतोष सिंह मेड़तिया ने भी उपयोगी जानकारी एवं हिदायत है आर्य जनों को दी न्यास के मंत्री जी आर्य किशनलाल जी गहलोत ने सभी वक्ताओं और श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया शांति पाठ एवं जय कारों के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

फोटुएँ आवरण पृष्ठ ३ पर देखें।

# <u>महाशिवरात्रि महोत्सव सम्पन्न</u>

फाल्गुन कृ. त्रयोदशी संवत् २०७६ विक्रमी शुक्रवार २१ फरवरी २०२० को वेद विज्ञान मन्दिर, वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान भागलभीम, भीनमाल में महाशिवरात्रि एवं ऋषि बोध दिवस के अवसर पर 'बौद्धिक स्वतन्त्रता की ओर' विषय पर सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता संस्था प्रमुख आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी ने की तथा मुख्य वक्ता भी आचार्य जी ही थे।

सम्मेलन से पूर्व श्री केशवदेवजी के पौरोहित्य में संस्थान की यज्ञशाला में यज्ञ आयोजित किया गया, जिसकी ज्वालाओं को प्रकृति अपने आँचल से मानो पंखा झलती हुई पार्श्व और ऊर्ध्व दिशाओं की यात्राएँ कराती हुई हवि की सुगन्धि भी चहुँ ओर बिखेर रही थी। यज्ञोपरान्त आयोजित सम्मेलन में श्री महेशजी बागड़ी, श्री हुकमाराम जी एवं मण्डली ने 'सत्ता तुम्हारी भगवन्' प्रस्तुत किया, पं0 श्री केशवदेव जी ने 'जिसने भी लिया प्रेम से तेरे नाम का सहारा' गाया।

सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य श्री ने अपने लगभग डेढ़ घंटे के व्याख्यान के आरंभ में **मंच की पृष्ठभूमि में चित्रित शिव, प्रताप और दयानन्द के प्रेरक जीवन को स्मरण कराया।** इसके बाद आचार्यश्री ने **मनोमस्तिष्क को झकझोर देने वाली वक्तृता** में भारत के प्राचीन वैज्ञानिक गौरव की चर्चा करते हुए इसके पतन की कहानी बताई। इसके साथ उन्होंने कहा वेद एवं ऋषियों के ज्ञान विज्ञान के अनुसार जब तक यह देश चलता रहा, तब तक यह विश्वगुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र भी था और सोने की चिड़िया भी था। **जब वैदिक ज्ञान विज्ञान का पतन हुआ, तभी से निर्धन, दुर्बल एवं पराधीन भी होता चला गया।**

उन्होंने कहा कि हम वैदिक विज्ञान को आधुनिक विज्ञान का अन्धानुगामी वा दास नहीं बना सकते, बल्कि **हमने सैद्धान्तिक भौतिकी के क्षेत्र में ऐसे रहस्यों को खोजा है, जिनकी वर्तमान विकसित भौतिकी कल्पना भी नहीं कर पा रही है। उन्होंने भारतीय इतिहास व प्राचीन विज्ञान को कल्पना मानने वालों की जमकर खिंचाई की और प्रबल तर्कों के द्वारा गौरव को संदर्भ और उदाहरण सहित प्रस्तुत किया मानो कोई शोधप्रबंध पढ़ रहे हों। उन्होंने भारत के कुछ प्रबुद्ध वर्ग से बौद्धिक दासता को त्याग कर अपने अन्दर आत्माभिमान एवं स्वदेशाभिमान जगाने की मार्मिक अपील की।**

इस अवसर पर सारस्वत अतिथि के रूप में भिवानी (हरियाणा) से पधारे भौतिकी के सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्री भूपसिंह ने आचार्य जी की बातों का न केवल समर्थन किया अपितु कहा कि देश में डॉ. मनमोहन सिंह के पश्चात् श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री आये और श्री नरेन्द्र मोदी के पश्चात् कोई और प्रधानमंत्री आ जायेगा।<u>परन्तु आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक</u>

इस भारत में केवल एक ही है, दूसरा कोई आने वाला भी नहीं है। इस कारण हम सबको इनका तन, मन व धन से न केवल सहयोग करना चाहिए अपितु इनके शरीर की रक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

अन्य सारस्वत अतिथि डॉ. संदीप कुमार सिंह, दिल्ली, जिन्होंने स्वीडन में रहकर नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिकों के साथ गम्भीर शोध किया है, ने कहा है कि आचार्य जी का **'वेदविज्ञान–आलोक' ग्रन्थ** पढ़ रहा हूँ। इसे **पढ़कर न केवल मेरा जीवन बदला है अपितु प्राचीन ज्ञान विज्ञान के गौरव को समझा तथा आधुनिक भौतिकी की न्यूनताओं को भी जाना है।** उन्होंने आशा व्यक्त की कि आचार्य जी के शोध से आधुनिक भौतिक वैज्ञानिकों को महान् लाभ होगा। इस अवसर पर अन्य सारस्वत अतिथि डॉ. वेदप्रकाश आर्य, सहायक प्रोफेसर भौतिकी, रीजनल कॉलेज, अजमेर ने कहा कि आज वास्तव में हम लोग बौद्धिक रूप से दास हैं और दुःखद बात यह है कि जो जितना अधिक प्रबुद्ध माना जाता है, वह उतना अधिक बौद्धिक दास है।

संस्थान के उपाचार्य श्री विशाल आर्य ने अंग्रेजों द्वारा भारत को बौद्धिक व राजनैतिक दास बनाने की पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए कहा कि मैकाले का स्वप्न आज पूर्णतः साकार हो रहा है। उन्होनें बताया कि अंग्रेजों के पूर्व लगभग १८८0 में भारत में लगभग ७, ५0, 000 साढ़े सात लाख गुरुकुल चलते थे, जिनमें न्यूनतम १८ विषयों की निःशुल्क शिक्षा दी जाती थीं। इन गुरुकुलों को अंग्रजों ने गैरकानूनी घोषित किया, गुरुकुलों को सहायता भी गैरकरनूनी घोषित कर दी गई, संस्कृत को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था। जीविकाओं के लिए अंग्रेजी को आधार बना दिया गया। उन्होंने कहा कि बौद्धिक दासता धीरे–धीरे शारीरिक दासता के भी कष्ट लेकर आती है। अतः हमें सजग हो जाना चाहिए। विशिष्ट वक्ता के रूप में इन्दौर से पधारे गोवैज्ञानिक श्री राकेश उपाध्याय ने आचार्य जी के 'वेदविज्ञान–आलोक' ग्रन्थ को महान् ग्रन्थ बताते हुए कहा कि इस ग्रन्थ के आधार पर भारत को फिर से महान् बनाया जा सकता है। उन्होंने चिकित्सा, कृषि के आदि के क्षेत्र में हो रही लूट की चर्चा करते हुए गौ के द्वारा स्वस्थ रहने और आरोग्यदायक फसल उत्पन्न करने के उपाय बतलाये। उन्होंने भवन निर्माण के क्षेत्र में सीमेन्ट की हानियों को प्रस्तुत करते हुए मिट्टी, चूना एवं देशी गाय के गोबर से मकान बनाने पर बल दिया। मंच का संचालन संस्था के न्यासी श्री राजेन्द्र सिंह सोढ़ा ने किया। इस अवसर पर कई प्रान्तों से पधारे लगभग 300 व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर तकनीकी स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण किये दो युवकों ने आचार्य जी से वैदिक भौतिकी पढ़ने के लिए प्रवेश लिया। फोटुएँ आवरण पृष्ठ २ पर देखें।


फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशक का स्थान – दयानन्द स्मृति भवन न्यास, मोहनपुरा पुलिया के पास, जोधपुर
२. पत्र का नाम – महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश 3. प्रकाशन अवधि – प्रति मास
४. मुद्रक का नाम – विजयसिंह भाटी
पता – दयानन्द स्मृति भवन न्यास, मोहनपुरा पुलिया के पास, जोधपुर
क्या भारतीय नागरिक है -हां ५. सम्पादक का नाम – विजयसिंह भाटी
पता – दयानन्द स्मृति भवन न्यास, मोहनपुरा पुलिया के पास, जोधपुर
क्या भारतीय नागरिक है – हां ६. प्रकाशक का नाम – विजयसिंह भाटी
पता – दयानन्द स्मृति भवन न्यास, मोहनपुरा पुलिया के पास, जोधपुर
क्या भारत का नागरिक है – हां
७. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो –विजयसिंह भाटी
मैं विजयसिंह भाटी घोषणा करता हूं कि ऊपर दिये गये तथ्य पूर्ण व सत्य है। हस्ताक्षर : विजयसिंह भाटी
दिनांक १-३-२०२०

# आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश को श्रद्धांजलियाँ

२३ दिसम्बर २०१६ को आर्यजगत् के उच्चतम कोटि के वैयाकरण, मूर्धन्य वैदिक विद्वान आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश के देहावसान पर उनकी अंतिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में २३ दिसम्बर २०१६ को श्रद्धांजलि सभा रखी गई थी। इस सभा में तथा अन्य माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास को प्राप्त विभिन्न श्रद्धांजलि / संवेदना संदेशों को लिपिबद्ध करके यहॉ प्रस्तुत किया जा रहा है: –

**श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर का शोक प्रस्ताव :** आचार्य श्रीमान् सत्यानंद जी वेदवागीश के असामयिक निधन होने पर संपूर्ण आर्य जगत्, महर्षि दयानंद सरस्वती की उत्तराधिकारीणी सभा, परोपकारिणी सभा परिवार को अत्यंत दुख हुआ। आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश स्वाध्यायशील, व्याकरण के महान विद्वान, विभिन्न वैदिक ग्रंथों के लेखक, विभिन्न गुरुकुलों के अध्यापक हो वैदिकधर्मी प्रवृत्ति के महान् पुरुष थे। आचार्य जी परोपकारिणी सभा के कर्मठ सेवाभावी ट्रस्टी थे।

आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश के निधन से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं उनके विछोह से शोक संतप्त परिवार को गहन् आघात सहन करने की शक्ति दे। परोपकारिणी सभा की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि ओम शांति शांति शांति।

**गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा अहमदाबाद:** आर्य समाज के आप्त पुरुषों में से एक व्याकरण के मर्मज्ञ श्रद्धेय पंडित सत्यानंद वेदवागीश जी को श्रद्धांजलि।

मांगसर कृष्ण पक्ष द्वादशी तिथि तदनुसार २३ दिसंबर २०१६ को आर्य समाज के आप्त पुरुषों में से एक श्रद्धेय पंडित सत्यानंद वेद वागीश जी के देहावसान की सूचना पाकर आर्य जगत के मानसपाट पर दुख का उभरना स्वाभाविक है।

पंडित श्री सत्यानंदजी के वैदिक साहित्य के लेखन कार्य, संस्कृत के प्राचीन व्याकरण के प्रति अतुल्य योगदान से व वैदिक विचारधारा के प्रति निष्ठा और पुरुषार्थ का परिचय मिलता है वैदिक वांग्मय के कंठस्थीकरण को जानकर हमें ईश्वर प्रदत्त बुद्धि और मस्तिष्क की क्षमता का परिचय मिलता है।

ऐसे कर्मठ पंडित जी के जाने से आर्य जगत को बड़ी क्षति पहुंची है ईश्वर में पूर्ण श्रद्धा व विश्वास का प्रतिफल पंडित जी के आगामी जीवन की गति श्रेष्ठता की ओर रहेगी। ईश्वर दिवंगत पुण्यात्मा के कार्य को निरंतरता देने में हम आर्यजनों व परिवार जनों को प्रेरणा और शक्ति प्रदान करें। उसी प्रेरणा व शक्ति का परिचय देते हुए उनके कार्य विचारों से पंडित जी को जीवंत रखकर ही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालंधर:** आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, अद्वितहय वैयाकरण

आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश का निधन आर्य जगत की अपूरणीय क्षति है। आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश व्याकरण के प्रकांड विद्वान थे उनका जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित था। आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश को व्याकरण के सूर्य के नाम से जाना जाता था। आचार्य जी ने संपूर्ण जीवन आर्यसमाज एवं महर्षि दयानंद की विचारधारा का प्रचार प्रसार किया। मधुरभाषी, व्यवहारकुशल आचार्य सत्यानंदजी अपने सौम्य स्वभाव के कारण संपूर्ण आर्य जगत में लोकप्रिय थे।

आचार्य सत्यानंद जी के अकस्मात् निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गहरा शोक व्यक्त करती है। उनके निधन से आर्य जगत ने एक प्रकांड विद्वान खो दिया है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजाब के समस्त आर्य समाज एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से आचार्य जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा पूज्य आचार्य श्री को अपने चरणों में स्थान देकर शांति व सद्गति प्रदान करें तथा आर्य जगत को क्षतिपूर्ति के लिए धैर्य शक्ति व प्रेरणा प्रदान करें। हम सभी पूज्य आचार्य श्री के पद चिन्हों पर चलते हुए वेदों की वाणी को घर–घर में पहुंचाने का संकल्प लें –प्रेम भारद्वाज, महामंत्री।

**मुख्यमंत्री राजस्थानः** प्रिय आर्य श्री कृष्ण लाल गहलोत जी, आपके २६ दिसंबर २०१६के पत्र से मुझे यह जानकर गहरा दुख हुआ कि आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान श्रद्धेय आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश हमारे बीच नहीं रहे और उनका अंत्येष्टि संस्कार २३ दिसंबर २०१६को जयपुर में हो गया।

उनके अंतिम कार्यस्थल महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर में २६ दिसंबर २०१६को राष्ट्रीय श्रद्धांजलि सभा के आयोजन के अवसर पर आपने मुझे याद किया इसके लिए आभारी हूं। मैं आचार्य श्री को श्रद्धा पूर्वक की स्मरण एवं नमन करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। हार्दिक संवेदना सहित, सद्भावी–**अशोक गहलोत**।

**श्री आर्यसमाज मंदिर ट्रस्ट भाभर गुजरातः** ओ३म्! श्रद्धांजलि!
श्रीमती सुमित्रा देवी जी तथा श्रुतिधरजी जी उदयन जी सपरिवार

आर्य जगत के महान वेदों के प्रकांड आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीश का दुखद अवसान तारीख २३ दिसंबर २०१६सोमवार को हुआ– यह समाचार जानकर बाबर आर्य समाज के परिवारों को गहरा दुख हुआ।

सत्यानंद जी ने जीवन भर आर्यसमाज का प्रचार और प्रसार किया। उन्होंने पुस्तके बहुत ही लिखी। वह भाभर में बहुत आते थे। हम सब ने उनके पास बैठकर बहुत कुछ उम्दा संस्कार सीखे हैं। वे बहुत सरल स्वभाव वाले एक महापुरुष थे। परमपिता परमात्मा

उनकी पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को दुख सहन करने की शक्ति देते रहे –यही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

**आर्यसमाज घाटकोपर पश्चिम मुंबईः शोक प्रस्ताव!** हमें यह जानकर अत्यंत कष्ट हुआ कि आर्य जगत के वेदों और व्याकरण के प्रकांड विद्वान आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश का दिनांक २३ दिसंबर २०१६को जयपुर में देहांत हो गया। इस संबंध में आर्य समाज घाटकोपर की ओर से सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा के लिए सद्गति और शांति की कामना की गई और शोकाकुल परिवार (पत्नी सुमित्रा देवी, पुत्र श्रुतिधर उदयन, पुत्रवधू पायल मेघना) को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

**आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंजः जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।** माननीय भ्राता सुरेश चंद्र जी अग्रवाल! प्रधान; माननीय भ्राता विजय सिंह जी भाटी! कार्यकारी प्रधान; माननीय भ्राता किशन गहलोत! मंत्री स्मृति भवन न्यास जोधपुर। सप्रेम नमस्ते! दिनांक २३ दिसंबर २०१६को लगभग ग्यारह बजे करीब मान्यवर भ्राता कमल किशोर आर्य ने जोधपुर से दूरभाष कर यह सूचना दी कि आचार्य सत्यानंद वेदवागीशजी नहीं रहे। समाचार सुनकर अति खेद हुआ। माननीय आचार्य सत्यानंद वेदवागीशजी आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान थे। उनके अवसान की सूचना सुनकर लगा कि विद्या क्षेत्र का दृढ़तम स्तंभ ढह गया। आचार्यजी ने अपने ज्ञान के द्वारा आर्यसमाज की निरंतर आजीवन सेवा की। विभिन्न गुरुकुलों में जाकर ज्ञान के आशीर्वाद प्रदान किए।

आचार्य जी को आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज राजस्थान से अति लगाव था, मेरे प्रति भी सदा आदर भाव रखते रहे। गुरुकुल में लगभग ढाई वर्ष रहे। जब यहाँ से गए तब उन्होंने कहा थाः 'जा रहा हूँ, अभी ले जा रहा हूँ पुस्तकें, बाद में सब पुस्तके गुरुकुल में भिजवा दूंगा।' उनके इस अनुग्रह को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

माननीय आचार्यजी की सेवाओं के लिए आर्यसमाज सदा ऋणी रहेगा। आचार्यजी के चले जाने से वेद परंपरा की कड़ी टूटी है, उस कड़ी को बना पाना बड़ा कठिन है। अस्तु, गुरुकुल में तत्काल शोक सभा की गई। मैं अपनी ओर से एवं गुरुकुल परिवार की ओर से शोक व्यक्तकरती हूँ किमधिकं। **–आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा।**

वेदवागीश जी के निधन से आर्य जगत को जो हानि हुई है उसका कोई भरण नहीं हो सकता। व्याकरण व अनेक वेद ग्रंथों के अनेक खंडों का प्रकाशन हजारों लोगों के जीवन के उत्थान व राष्ट्र निर्माण हेतु मील का पत्थर साबित होगा। **–श्रद्धानंद सरस्वती अलीगढ़।**

श्रद्धेय आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश वर्तमान आर्य जगत में व्याकरण शास्त्र के

सूर्य थे। उन्होंने जीवनभर अध्ययन व अध्यापन में जैसा पुरुषार्थ किया, वैसा कम ही देखा जाता है। आचार्यश्री पुरुषार्थ, पाण्डित्य के मूर्तिमान् स्वरूप होते हुए भी अतीव विनम्र एवं सादगी के प्रतीक थे। विद्या एवं विद्वानों के प्रति उन्हें गहरा सम्मान था। वे हमारे न्यास के भी संरक्षक थे।उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। **–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वेद विज्ञान मंदिर भागल भीम, भीनमाल।**

वैदिक विद्या का बहुत बड़ा स्तंभ ढह गया। इसकी क्षतिपूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है। आर्यसमाजियों को भी उनकी विद्वता का ज्ञान पूरी तरह से नहीं है। फिर भी वे बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर गए हैं, जिसके लिए आर्य जगत उनका सदा ऋणी रहेगा। परमात्मा उन्हें सद्गति प्रदान करें। मेरी विनम्र श्रद्धांजलि और सादर प्रणामः**–आचार्य वेदप्रिय शास्त्री।**

श्रद्धेय आचार्य सत्यानंद वेदवागीशजी एक सामान्य व्यक्ति दिखते हुए उच्च कोटि के प्रखर व्याकरणाचार्य, प्रमुखविद्वान, लेखक, मनीषी, चिंतक एवं प्रत्येक मानव के हृदयस्पर्शी वक्ता थे। इनके पावन चरणों में हम हार्दिक संवेदनशील श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए इनके भावी पथ के आत्मशांति एवं ईश्वरलोक में प्रभु के पास स्थान प्राप्त करने की कामना करते हैं। **–महेश चंद्र गर्ग जयपुर।**

आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, संस्कृत प्रेमी व लोक व्यवहार निपुण यज्ञपुरुष थे। संस्कृत एवं वेद के प्रचार–प्रसार के लिए कृत संकल्प, विविध ग्रंथों के रचयिता ऋषि तुल्य आचार्य के परम तत्व में विलीन होने से संस्कृत जगत को ही नहीं अपितु सर्व समाज में उत्पन्न न्यूनता की पूर्ति संभव नहीं है। परमात्मा उनकी आत्मा को परमानंद एवं परिवार को व समाज को उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। ब्रह्मलीन आत्मा को शत शत नमन् **–प्रभावतीजी चौधरी, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग ज.ना.वि.वि जोधपुर।**

संस्कृत विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, वेद शास्त्र के मनीषी आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश के पंचतत्व लीन होने पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। प्रभु उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। उन्होंने स्वाध्याय के मार्ग को अपनी निष्ठा से आलोकित किया। **"यद्यादाचरति श्रेष्ठस्लोकस्तदनुवर्तते"** हम उनके बताए गए मार्ग पर अनुगमन कर समाज तथा राष्ट्र को संबोधित करेंगे।**–सरोज कौशल, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर।**

लीडी के लाल को नमन, वेद व्याकरण भाल को नमन, रचयिता– साहित्य विशाल को नमन, आचार्य श्री को विनम्र श्रद्धांजलि, उदयन, श्रुति के परिवारों को सांत्वना, माताजी को चरण स्पर्श, सार्वदेशिक आर्य वीर दल की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

**–सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, अलवर।**

हे प्रकाशस्वरूप! आप समस्त श्रेष्ठकर्मों के विधाता व प्रेरक हैं! आप कृपा कर आचार्य सत्यानंद वेदवागीशजी के जीवन काल, जो हम समस्त आर्यों के लिए एक आदर्श है, हम सभी उनके पथ के पथिक बन, आप कृपा कर अत्यंत मेधावीजनों के मध्य स्थित होने की कृपा करें व आचार्य जी की महान् आत्मा को अपना आनंद प्रदान करावें। **–आर्य दुर्गादास वैदिक**

आर्य सत्यानंद जी वेदवागीश एक विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उनके निधन से समाज के लिए एक बड़ी हानि हुई है। उनकी आत्मा को चिरशांति की प्रार्थना करते हैं। **–आर पी आर्य, इंडियन मैप सर्विस, जोधपुर**

**आर्य समाज श्रीगंगानगर**: व्याकरण वेद और वैदिक साहित्य के ललितपुर से विद्वान, अनेक बौद्ध ग्रंथों के अधिकृत प्रामाणिक लेखक, प्रखर वाणी के धनी, जीवन को वैदिक धर्म के लिए समर्पित कर देने वाले आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीश का देहावसान आर्य जगत की अपूरणीय क्षति है। आर्यसमाज श्रीगंगानगर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि प्रदान करता है–**रवि चड्ढा, प्रधान**

आचार्य श्री सत्यानंदजी वेदवागीश एक महान विभूति थे। उन्होंने वेदों का बारीकी से अध्ययन किया और अद्भुत व्याकरणाचार्य थे। कई वेद मंत्र कंठस्थ थे। वेदों के मंत्रों के द्वारा व्याख्यान देते थे और सब आर्यों को संध्या और देव यज्ञ के मंत्रों को कंठस्थ करने की प्रेरणा देते थे। हम सब आचार्यजी के बताए मार्ग पर चलकर अपना एवं राष्ट्रीय तथा समाज का कल्याण कर सकते हैं। आचार्य जी को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें **–आर्य जय सिंह गहलोत पालड़ी नाथा ।**

आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीश के असामयिक निधन से आर्य जगत ने वेदों का मर्मज्ञ व्याकरण सिद्ध अवम प्राचीन आर्ष गुरुकुल परंपरा का वाहक खो दिया, जिसकी क्षति अपूरणीय है। मैं परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं उनके परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करें। **–अभिमन्यु गहलोत ब्यावर**

आचार्य श्री सत्यानंदजी वेदवागीश वेद और व्याकरण के प्रकांड विद्वान, आर्य जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र, जिनकी कथनी और करनी में सदैव समानता रही। आपको हम सभी श्रद्धांजलि देते हैं। परमपिता परमात्मा आपके परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान

करें। आपने अपनी लेखनी से अद्‌भुत ग्रंथ लिखे जिन्हें पढ़कर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अद्‌भुत परिवर्तन अनुभव करता है। परमात्मा आपको मोक्ष प्रदान करेंगे। उन्हें हमारी श्रद्धांजलि–**बसंती आर्या सूरसागर जोधपुर**

ओ३म्! परम पूज्य आचार्यजी, जो कि मेरे दादा के समान थे, जिन्होंने मेरे पुत्र का नामकरण भी किया, हमारे निवास पर भी छह–सात महीने तक उनका सानिध्य मिला, जिससे हमें हमारे जीवन में बहुत से संस्कार मिले। मेरे पुत्र आर्येंद्र व अक्षत है– वे दोनों उन्हें बड़े दादा कहकर संबोधित करते थे। वह भी एक बार शोकमय हो गए। ऐसा लगता है जैसे हमारे सर से साया हट गया हो। मैं मेरे परिवार सहित श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं–**महेंद्र सिंह आर्य सूरसागर**

आचार्य श्री सत्यानंदजी वेदवागीश व्याकरण शास्त्र के श्रेष्ठतम विद्वान थे। महर्षि दयानंद स्मृति भवन में उन्होंने निवास किया, जिससे महर्षि दयानंद स्मृति भवन की कीर्ति भारत भर में बढ़ी। आचार्यजी स्मृति भवन की शोभा थे। आचार्यजी के जाने से संपूर्ण आर्य जगत को बहुत बड़ी हानि हुई है। आचार्यजीं ने सत्य के आनंद में जीवन जिया। सरस, सरल स्वभाव के धनी थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि आचार्य जी को एक ऋषि का जीवन देकर संसार में भेजें –**रामस्वरूप लाल भवन जोधपुर**

आचार्य श्री सत्यानंदजी वेदवागीश यथा नाम तथा गुण की मूर्ति थे। वेद के सत्य, ज्ञानवर्धक प्रवचन द्वारा श्रोताओं को आनंद विभोर कर देते थ) अपने प्रवचनों में वे सदैव सभी को ईश्वर भक्ति करने की प्रेरणा देते थे। प्रवचनों में वे अपनी मनपसंद प्रभु से कामना की निम्नलिखित पंक्तियॉ अक्सर गाया करते थे "अमीरस पिला दो पा करके मुझको, रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता" उनकी स्मृति हमें सदा बनी रहेगी। प्रभु उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें––**बुद्धि प्रकाश आर्य लाल भवन घंटाघर**

आचार्य श्रीमान् सत्यानंदजी वेदवागीश के जोधपुर प्रवास पश्चात आपका सीधा सानिध्य प्राप्त हुआ। सही मायने में आप हर समय आचार्य की भूमिका में रहते थे। हमें प्रत्येक वेद मंत्र व प्रत्येक शब्द की व्याख्या कर समझाने का प्रयास आपका सदैव रहा। इनके निधन से हुई क्षति की पूर्ति नहीं की जा सकती। शत–शत नमन! – **श्याम आर्य, आर्यसमाज जालौरि का बास, जोधपुर।**

वैदिक संस्कृति के ज्ञान के प्रवाह के माध्यम आचार्यश्री सत्यानंद जी के देहांत के समाचार जानकर ऐसा लगा मानो आर्य समाज के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने का जो कार्य पिछले कुछ वर्षों से तीव्र गति से चल रहा था उसको धक्का लगा है। आचार्य जी से हमारे परिवार का दशकों पुराना संबंध रहा है और स्मृति भवन से उनके संबंध के कारण यह शौक और गहरा है। ईश्वर उन्हें स्थाई शांति प्रदान करें –**धीरेंद्र शर्मा, कमला नेहरु**

नगर जोधपुर

आचार्यश्री को मेरा कोटि–कोटि नमन्। आचार्य जी मुझे गुरुकुल करतारपुर में वेद पाठ सीखने का सौभाग्य मिला और मेरी शिक्षा पूरी करके मैं कर्म से जोधपुर आ गया और कुछ दिन बाद मुझे आचार्यजी का आशीर्वाद बराबर मिलता रहा। आचार्यजी की डॉट ने मुझे गलती से दूर किया और मेरे लिए वह डॉट हवन के रूप में बदल गई और उस दिन से मैंने प्रतिदिन हवन का संकल्प किया। उस दिन से आज लगभग ५ वर्ष होने जा रहे हैं। उस दिन से आज तक हवन करके ही भोजन किया है। जिस समय कार्य से बाहर होता हूं तब मानसिक रूप से करता हूँ। आज मैं सच्चा आर्य बनने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता हूँ – यह प्रेरणा मुझे आचार्य जी द्वारा ही प्राप्त हुई। ऐसी महान विभूति के चरणों में मेरा पुनः कोटि कोटि वंदन एवं नमन और आचार्य जी की बात आगे बढ़ाता रहूँ – यही मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी–**राधेश्याम विद्यालंकार आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर**

सृष्टि नियंता की विधि विधान को स्वीकार करना ही होता है। आचार्य जी हमारे परिवार में पिता जी ( श्री केशवसिंह जी) के पश्चात वरिष्ठ पुरुष थे। उन्होंने अपने नाम के अनुरूप ही कर्तव्य को वहन किया और सुझाव एवं मार्गदर्शन मिलता रहा। हमारे ऊपर से तो वरदहस्त उठ गया। दिवंगत एवं परिबार के प्रति मंगल कामना–––**कौशल्या सांखला, केशव भवन, पांचवी चोपासनी रोड जोधपुर**

ईश्वर की व्यवस्था अनुसार जन्म मृत्यु निश्चित है, परंतु ईश्वर की कृपा से जीवन का अवसर शुभ कार्यों में मिला है। आप विद्वान ही नहीं थे परंतु संसार हेतु व्यवहारिक प्रेरणा स्वरुप थे। मेरे परिवार में कई निर्णय बहुत मार्गदर्शक के रुप में परिवार को सही मार्ग सुझाते रहते थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। वे त्यागी रूप में शिक्षा के विस्तार में सहयोगी रहे, जो प्रत्येक आर्य समाजी के लिए प्रेरणा देते रहेंगे –**यशवंत सिंह आर्य सांखला पुत्र स्वर्गीय केशव सिंह जी सांखला केशव भवन चोपासनी रोड जोधपुर**

आचार्य वेदवागीशजी व्याकरण के बहुत ही ज्ञानी थे। हवन या व्याख्यान में हमेशा उनका एक वाक्य 'जब मैं ८६ वर्ष का बालक कमर सीधी रखकर बैठ सकता हूँ तो आप क्यों नहीं'। इसी तरह हवन व व्याख्यान में संस्कृत के शब्दों को अच्छी तरह समझाते थे। मैंने उनके दर्शन स्मृति भवन जोधपुर में उनके प्रवास के दौरान किए। उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो, ––**विरेंद्र कुमार शर्मा पावटा जोधपुर**

समादरणीय आचार्य सत्यानंदजी वेदवागीशजी, विश्व में वेदमनीशी, जिनका भेद व्याकरण का कोई सानी नहीं था। जिनका व्यक्तित्व –सरल स्वभाव, सादगीपूर्ण जीवन, ऋषि दयानंद के प्रति प्रकार श्रद्धा, आर्शविद्या के प्रचारक तथा सदैव प्रातः सायं संध्या

उपासना व याज्ञिक जीवन! हम सभी आर्यों के प्रेरणा स्रोत को हृदय से श्रद्धांजलि––**शिवराम आर्य चौनपुरा बावड़ी पूंजला जोधपुर**

आर्य जगत के पिता, व्याकरण के सूर्य आज हमारे मध्य शरीर से नहीं है। परंतु अपने अक्षुण्णवेद मूल्यों के चिंतन से सदैव हमारे साथ रहेंगे। युवा युवतियों के सर्वांगीण विकास के प्रेरक एवं सामाजिक व दांपत्य जीवन हेतु उनकी लेखनी अविरल गति से चलती रही–**सोमेंद्र आर्य, सूरसागर जोधपुर**

आप संस्कृत के महान विद्वान थे। आपका जीवन सादगी पूर्ण था । मुझे एक बार उनके कक्ष में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी धर्मपत्नी से मिलने गई थी। तब देखा था। चारों और पुस्तकें ही पुस्तकें। आप के प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छे लगते थे।ऐसी महान् विभूतियॉ सदैव जीवित रहती हैं। ओ३म –**सुश्री प्रतिभा पुंडीर बनाड़ रोड जोधपुर**

मेरे परिवार के बहुत ही करीब थे। मैंने उनके ह्रदय में पिताजी को पाया था। आपके जीवन को देख मैंने मेरे एक पुत्र एक पुत्री को गुरुकुल शिक्षा देने का प्रण आप की प्रेरणा से ही लिया। आपका जीवन बहुत पवित्र हमेशा ईश्वर भक्ति में रहता था। मैं अत्यधिक दुखी हुआ आप को खोकर–**मुकेश शर्मा महर्षि दयानंद स्मृति भवन जोधपुर**

युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जिस विशुद्ध उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की थी, उस उद्देश्य को पूरे विश्व में अपनी लेखनी और अपनी ओजस्वी वाणी में गुरुवर श्रद्धेय आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीशजी ने आगे बढ़ाया। उनका सानिध्य एवं मार्गदर्शन मुझे भी प्राप्त हुआं ईश्वर आचार्यजी की आत्मा को सद्गति दे, हम सब उनके बताए मार्ग पर चलें।–**डॉ महेश परिहार मंडोर जोधपुर**

परम पूज्य सत्यानंदजी वेदवागीश वेद और संस्कृत के महान आचार्य थे। वेदों के प्रचार की इनकी मधुर शब्दावली थी। अपनी अमृतमयी वाणी से संपूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त की। विशेषकर सूर्यनगरी के महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में सभी को अपने पुत्र, पुत्री या शिष्य समझकर आत्मीयता से यज्ञ एवं वेदों का ज्ञान प्रदान कराया।उनके पथ का अनुसरण करके ऋषि दयानंद के वेदों का प्रचार घर–घर करेंगे उनकी आत्मा को शांति मिले–––**श्रीमती ज्योति सोलंकी सूरसागर जोधपुर**

वेदों के प्रकांड पंडित, वक्तृत्व कला में निपुण, आर्य जगत के रत्न, मधुरता एवं शुद्धता से मंत्रोच्चारणकर्त्ता, वैदिक शब्दों को लौकिक व्यवहार के प्रयोगकर्त्ता, स्वयं को ८६ वर्ष के युवा कहने वाले, सदैव कमर सीधी रखकर बैठने वाले आचार्य सत्यानंद वेदवागीश को आर्य वीर दल राजस्थान की ओर से शत–शत नमन! अनेक शिविरों एवं कार्यक्रमों में आपके बौद्धिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ मैंने एक वर्ष गुरुकुल चित्तौड़गढ़ तथा आठ वर्ष गुरुकुल आबू पर्वत में अध्ययन किया। अतः जब भी आचार्यजी से भेंट होती,

व्याकरण संबंधित प्रश्न उत्तर अवश्य होते। ऐसे महान स्वाध्यायशील विद्वान को सच्चे शब्दों में श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनके ग्रंथों का अध्ययन करेंगे। आचार्यजी सदैव सत्य का आनंद प्रदान करते हुए संस्कृत, वेद, यज्ञ, धर्म के रक्षक, उत्तम लेखक, विचारक, शास्त्रार्थ महारथी, सिद्धान्तवादी, मनोविनोदी, ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त, युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। आपने मेरे गृह जैसलमेर पधारकर परिवारजनों को आशीर्वाद प्रदान किया था,। आर्य वीर दल एवं आर्य समाज जैसलमेर की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि – **गगेन्द्र शास्त्री**

आचार्यश्री के विरल व्यक्तित्व, सरल स्वभाव व कर्मठ कृतिव का गुणगाान करते हुए उनके बताए पथ पर चलने के संकल्पवान्, उनकी आत्मा की शान्ति और परिजनों को सहनशीलता प्रदान करने हेतु प्रार्थी निम्नांकित महानुभावों ने भी उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है–

स्वामी संपूर्णानंद, मथुरा, उत्तर प्रदेश। प्रकाश मुनि, अलीगढ़ उत्तर प्रदेश। श्री चेतन प्रकाश आर्य, लाल सागर। श्री सत्य सोनी, जालोरी द्वार जोधपुर। श्री नरेंद्र आर्य, पाणिनि नगर, जोधपुर। श्री सुधांशु टाक, सरदारपुरा। आर्यन पाइप ट्रेडर्स, सोजती गेट जोधपुर। श्री मुरली मनोहर आर्य सुनारों का बास जोधपुर। श्री गंगासिंह, महामंदिर तीसरी पोल जोधपुर। श्री अर्जुन सिंह गहलोत मगरा पूंजला जोधपुर। श्री रामदयाल आर्य गजानंद कॉलोनी सुतला। यज्ञ दत्त सोनी, पावटा, जोधपुर। श्री ओमप्रकाश मेवाड़ा पाली मारवाड़, श्री दुर्गेश कुमार सोनी, जोधपुर। श्री पदमसिंह आर्य भगत की कोठी, आर्यहुकमाराम बंजारा आर्यवीरदल पाली आर्य गौरीशंकर सोमनाथ पाली। लक्ष्मी देवी, नागोरी बेरा मंडोर। प्रेम सिंह सांखला, मगरा पूंजला। लक्ष्मीनारायण पुत्र श्री अमृतलालजी सोनी सुनारों का बास जोधपुर, डॉ विनोद कुमार दुबे, होम्योपैथिक चिकित्सक, स्मृति भवन। प्रकाशसिंह सांखला, जूनी बागर, महामंदिर जोधपुर। मानाराम आर्य, बालोतरा आर्य समाज, श्री शंकर लाल आर्य जोधपुर। डॉ छैलसिंह राठौर, बीजेएस जोधपुर। श्रीमती स्नेहलता गहलोत, राज बाग सूरसागर जोधपुर। सपना और दीपक गुप्ता मोहनपुरा जोधपुर। रामप्रसाद आचार्य प्रथम पुलिया चोपासनी हाउसिंग बोर्ड जोधपुर। राजेश आर्य, महर्षि दयानंद स्मृति भवन जोधपुर। रमेश चंद्र गहलोत मंडोर जोधपुर। आर्य भीकाराम भाटी, फूल बाग, मंडोर, जोधपुर। श्री शेर सिंह गहलोत, फूलबाग जोधपुर। नारायण सिंह गहलोत, रातानाडा जोधपुर। आर्य सोहन सिंह गहलोत चैनपुरा बावड़ी। पूरण सिंह चौहान, जालौरिया का बास जोधपुर। डॉक्टर आर्य त्रिलोक सांखला, आर्यसमाज जालौरियॉ का बास जोधपुर। चम्पालाल आर्य, पाबूपुरा, जोधपुर। हिमांशु गर्ग, नरपत आर्य जोधपुर। मदनलाल गहलोत व संजय कुमार आर्य सरदारपुरा जोधपुर। प्रवीण भाटी शास्त्री नगर जोधपुर।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा आयोजित
महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध
रात्रि पर्व की झलकियाँ (समाचार भीतर के पृष्ठों पर देखें।)

Postal Reg. Jodhpur/ 434/2018-20

Date of Posting 9,10-03-2020
Date of Print 5-03-2020

# महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर के नेतृत्व में जोधपुर की आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं द्वारा सर्वहिन्दूजाति के ४० जोड़ो का सामूहिक विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से सम्पन्न करवाया गया। (समाचार भीतर देखें)

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, 0291-2516655 महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलिया के पास जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराणा मौहल्ला केरू हाऊस जोधपुर फोन नं. 9829392411 से मुद्रित।

सम्पादक फोन नं. 9460649055

Book-Post